A Daily News Magazine

इंदौर

रविवार, 3 नवंबर, 2024

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 10 अंक 37, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2 (डाक पंजीयन संख्याः MP/IDC/1529/2016-2018)

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmailĐcom

facebookĐcom/subahsaverenews

wwwĐsubahsavereĐnews

twitterĐcom/subahsaverenews

नया दिन, नई उड़ान

फोटो : पंकज शर्मा

सुप्रभात

दौड़ पड़ती है समूची नदी
एक पत्थर के हटते ही,
उसके स्थान को भरने के लिए
उग आती है घास-फूस
एक पेड़ के गिरते ही उसकी जगह
तस्वीर के टूट जाने पर
उसकी जगह धूल भरा
एक निशान रह जाता है
भरी हुई हैं बातें
वही रोज़मर्रा की ज़रूरतों और संघर्षों से
ख़ाली चेहरा भला कब होता है ख़ाली
उसमें भरी होती है उदासी
कोई जगह कभी ख़ाली नहीं रहती
और कोई नहीं तो
समय ही भर देता है सारी रिक्तियां।

-पूनम सोनछात्रा

एमपी का 69वां स्थापना दिवस समारोह में सीएम बोले-

हमारा अतीत गौरवशाली

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश के 69वें स्थापना दिवस पर शुक्रवार को 10 साल बाद रवींद्र भवन के मुक्ताकाशी मंच पर समारोह शुरु हुआ। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा, एमपी की स्थापना का पहला साल 1956 है। हमने प्रदेश में 4 दिन का यह उत्सव और 5 दिन का दीपोत्सव मनाने का निर्णय किया है। सीएम ने कहा, अयोध्या से चलकर भगवान राम ने मध्यप्रदेश के चित्रकूट में सर्वाधिक साल गुजारे हैं। हमारा अतीत भी इतना गौरवशाली है, यह हमारा सौभाग्य है। कार्यक्रम की शुरुआत शाम 7 बजे सुहासिनी जोशी ने मध्यप्रदेश गायन से की।

रवींद्र भवन में आयोजित गोवर्धन पूजा कार्यक्रम में मुख्यमंत्री यादव बोले

बूढ़ी और अपाहिज गायों की देखभाल कांजी हाऊस में नहीं, गौ-शालाओं में होगी

***10 या अधिक गायें पालन करने वालों को दिया जायेगा अनुदान**
*** गौवध के दोषियों को मिलेगा 7 वर्ष का सख्त कारावास**
*** गौ-वंश पालकों को भी दिये जायेंगे क्रेडिट कार्ड**

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि मध्यप्रदेश में गौ-पालन को बढ़ावा देकर किसानों और गौ-पालकों की आर्थिक सशक्तिकरण का कार्य किया जा रहा है। शहरों में कांजी हाऊस के स्थान पर गौ-वंश की देशभाल के लिए गौशालाएं प्रारंभ की जायेगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश के 51 हजार से अधिक ग्रामों में दूध का उत्पादन बढ़ाते हुए इस क्षेत्र में मध्यप्रदेश को पूरे देश में प्रथम स्थान पर लाने का प्रयास है। इसके साथ ही अगली पशुगणना में प्रदेश पहले तीसरे स्थान से पहले स्थान पर लाने के के समस्त प्रयास भी किये जाएंगे। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश में गौ-वंश पालन पर क्रेडिट कार्ड देने की पहल की गई है। हमारे किसान भाई और पशुपालक दीपावली के बाद गोवर्धन पूजा करते हैं। प्रदेश में पहली बार शासन स्तर पर गोवर्धन पूजा के कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इसका उद्देश्य हमारी हजारों वर्ष पुरानी संस्कृति और गौ-माता के प्रति सम्मान की भावना को सशक्त करना है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव शनिवार को रवींद्र भवन परिसर भोपाल में राज्य स्तरीय गोवर्धन पूजा समारोह को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने उपस्थित नागरिकों को गोवर्धन पूजा की बधाई दी। प्रारंभ में मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने रवींद्र बहिरंग मंच पर गोवर्धन पूजा समारोह का दीप जलाकर शुभारंभ किया।

दुग्ध सहकारिता क्षेत्र में लौह पुरूष सरदार पटेल के योगदान का किया स्मरण-मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि राष्ट्रीय डेयरी डेवलपमेंट बोर्ड से अनुबंध कर प्रदेश में दुग्ध उत्पादन बढ़ाने की रणनीति तैयार की गई है। लौह पुरूष सरदार वल्लभभाई पटेल ने दुग्ध सहकारिता आंदोलन को गति दी थी। आज 'अमूल' के उत्पाद देश-विदेश में लोकप्रिय हैं। मध्यप्रदेश में गुजरात पैटर्न पर दुग्ध सहकारिता क्षेत्र में किसानों और पशुपालकों की सहायता के लिए ठोस कदम उठाए गए हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि दूध, घी और मक्खन के साथ गौ-काष्ठ का भी उपयोग हो रहा है।

सभी समुदाय कर रहे है गायों का पालन और पूजन : सांसद वीडी शर्मा

खजुराहो सांसद श्री वी.डी. शर्मा ने कहा कि मध्यप्रदेश सरकार ने गोवर्धन पूजा के साथ ही इस वर्ष अनेक पर्वों, त्यौहारों को महत्वपूर्ण स्थान दिया है। गाय के पालन और गौ-शाला के संचालन में वैज्ञानिक प्रयोग भी हो रहे हैं। आज मुस्लिम एवं अन्य समुदाय भी गौ-पालन और गौ-पूजन के कार्य से जुड़े हैं और इस कार्यक्रम में भी उपस्थित हैं। निश्चित ही समाजों को जोड़ने का यह महत्वपूर्ण प्रयास है।

मुख्यमंत्री निवास में हुई गोवर्धन पूजा

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने शनिवार को मुख्यमंत्री निवास में गोवर्धन पूजा की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने निवास स्थित गौशाला में विधि-विधान और मंत्र उच्चारण के साथ गोवर्धन पूजा कर प्रदेशवासियों के सुखी जीवन की प्रार्थना की। मध्यप्रदेश सरकार द्वारा संपूर्ण प्रदेश में गोवर्धन पूजा के कार्यक्रम आयोजित किए गए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने शासन स्तर पर गोवर्धन पूजा के कार्यक्रम आयोजित करने के निर्देश दिए थे। दीपावली के दूसरे दिन गोवर्धन पूजा की परंपरा काफी प्राचीन है। गोवर्धन एवं गाय की पूजा प्रतीक रूप में होती है। वास्तव में यह प्रकृति की पूजा का भी पर्व है। लोक जीवन में गोवर्धन पूजा की समृद्ध परंपरा है जिससे युवा पीढ़ी को अवगत करवाने की दिशा में भी इस वर्ष शासन द्वारा विशेष प्रयास किए गए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने गोवर्धन पूजा के बाद मुख्यमंत्री निवास स्थित गौ-शाला की गायों के साथ कुछ समय भी बिताया।

कांग्रेस को अब समझ आया झूठे वादे आसान नहीं

खड़गे ने कहा था-वादे वो करो,जो पूरा कर सको,नहीं तो बदनामी होती है

नई दिल्ली (एजेंसी)। मल्लिकार्जुन खड़गे के चुनावी वादों पर दिए बयान पर पीएम नरेंद्र मोदी ने शनिवार को पलटवार किया। प्रधानमंत्री ने सोशल मीडिया पर लिखा- कांग्रेस को यह बात अब समझ में आ रही है कि झूठे वादे करना तो आसान है, लेकिन उन्हें सही तरीके से लागू करना मुश्किल या नामुमकिन है।

दरअसल 31 अक्टूबर को बेंगलुरु में एक कार्यक्रम में कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा था कि, हमें वो वादे करने चाहिए, जो पूरे किए जा सके। नहीं तो आने वाली पीढ़ी के पास बदनामी के अलावा कुछ नहीं बचेगा। मोदी ने लिखा- कांग्रेस शासित राज्यों में स्थिति बदतर पीएम ने लिखा- कांग्रेस लगातार प्रचार अभियान चलाकर लोगों से वादे करती रहती है, जिन्हें वे कभी पूरा नहीं कर पाएंगे। अब वे लोगों के सामने पूरी तरह बेनकाब हो चुके हैं। आज कांग्रेस की सरकार वाले किसी भी राज्य को देख लीजिए - हिमाचल प्रदेश, कर्नाटक और तेलंगाना - विकास की गति और वित्तीय सेहत बद से बदतर होती जा रही है। उनकी तथाकथित गारंटी अधूरी पड़ी है, जो इन राज्यों के लोगों के साथ एक भयानक धोखा है। ऐसी राजनीति का शिकार गरीब, युवा, किसान और महिलाएं हैं, जिन्हें न केवल इन वादों का लाभ नहीं मिल रहा है, बल्कि उनकी मौजूदा योजनाएं भी कमजोर होती जा रही हैं।

पीएम ने आगे लिखा कि कर्नाटक में कांग्रेस पार्टी विकास करने की बजाय पार्टी की अंदरूनी राजनीति और लूट में व्यस्त है। इतना ही नहीं, वे मौजूदा योजनाओं को भी वापस लेने जा रहे हैं।

हिमाचल प्रदेश में सरकारी कर्मचारियों को समय पर वेतन नहीं दिया जाता। तेलंगाना में किसान अपने वादे के मुताबिक कर्जमाफी का इंतजार कर रहे हैं। इससे पहले छत्तीसगढ़ और राजस्थान में उन्होंने कुछ ऐसे भत्ते देने का वादा किया था जो पांच साल तक लागू नहीं किए गए। कांग्रेस किस तरह काम करती है, इसके कई उदाहरण हैं।

आरएसएस प्रमुख भागवत ने सुनाया संघ का संदेश

सामाजिक 'समरसता' लाने का दिया टार्गेट

ग्वालियर (नप्र)। ग्वालियर में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के चार दिवसीय विविध संगठन प्रचारक वर्ग के दूसरे दिन आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत ने सभी सदस्यों के विचार जानने के बाद संघ का संदेश सुनाया। साथ ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने हिंदू समाज के सभी वर्ग के लोगों में एकता और उनमें परस्पर प्रेम बढ़ाने के लिए सिर्फ भाजपाईयों के घरों तक ही नहीं बल्कि निचले स्तर तक ले जाने के लिए घर-घर पहुंचाने की जिम्मेदारी सौंपी है।

दिवाली से शुरू हुआ विविध संगठन प्रचारक प्रशिक्षण वर्ग-दोपहर के भोजन में सामाजिक समरसता के तहत घर-घर से जुटाया गए भोजन का स्वाद लिया है। जिसके बाद आरएसएस प्रमुख ने सभी प्रांत से आए प्रचारक व पदाधिकारियों के साथ बैठक की है। ऐसी भी सूचना है कि संघ के प्रचारक वर्ग के तीसरे दिन प्रदेश के मुखिया डॉ. मोहन यादव प्रचारक वर्ग में शामिल हो सकते हैं। ग्वालियर की जमीन पर 31 अक्टूबर (दीपावली) से 4 नवंबर तक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) का विविध संगठन प्रचारक प्रशिक्षण वर्ग शुरू हो चुका है। इसमें आरएसएस के 31 संगठनों के 554 प्रचारक भाग ले रहे हैं। इस प्रशिक्षण वर्ग में सर संघचालक डॉ. मोहन भागवत, संघ के सर कार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले सहित संघ के सभी सहसरकार्यवाह और अन्य प्रमुख पदाधिकारी शामिल हुए हैं। इस चार दिवसीय प्रचारक वर्ग में वे कार्यकर्ता भाग ले रहे हैं, जो सामाजिक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में सक्रिय रहते हैं। यह एक तरह का प्रशिक्षण वर्ग माना जा रहा है, जिसमें समाज के विभिन्न क्षेत्र व वर्ग के बीच संघ के कार्यों की समीक्षा और आगामी वर्षों के कार्यक्रमों की रूपरेखा पर चर्चा होगी।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक वर्ग में कई मुद्दों पर मंथन हो रहा है लेकिन सबसे बड़ा मुद्दा हिंदू समाज में सामाजिक समरसता है। सूत्रों के अनुसार शुक्रवार को प्रचारक वर्ग में सर संघचालक डॉ. मोहन भागवत और सर कार्यवाह दत्तात्रेय होसबोले की मौजूदगी में कार्यकारी मंडल के पदाधिकारियों ने संगठन के सभी 11 क्षेत्र तथा 46 प्रांत प्रचारकों को संघ के एजेंडे जिसमें पंच परिवर्तनों के द्वारा हिन्दू समाज में सामाजिक समरसता लाने के प्रयास के लिए इस संदेश को निचले स्तर तक ले जाने की जिम्मेदारी सौंपी हैं।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 30 °c
न्यूनतम 20°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ रविवार, 3 नवंबर 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है, हमें नष्ट भी कर सकती है; यह अग्नि का दोष नहीं है।
चाणक्य नीति

मथुरा में गोवर्धन पूजा की धूम, उमड़ा भक्तों का सैलाब

● विदेश से आए भक्तों का ढोल-नगाड़ों पर डांस ● 3 लाख श्रद्धालुओं ने की परिक्रमा,गिरिराज जी को चढ़ाए व्यंजन

मथुरा (एजेंसी)। मथुरा में गोवर्धन पूजा पर भक्तों का सैलाब उमड़ा है। श्रद्धालु गोवर्धन पर्वत की 21 किलोमीटर की परिक्रमा कर रहे हैं। अब तक 3 लाख श्रद्धालु परिक्रमा कर चुके हैं। शाम तक 5 लाख से ज्यादा श्रद्धालुओं के पहुंचने का अनुमान है। भारत के अलग-अलग राज्यों सहित विदेश से भी भक्त पहुंचे हैं। ढोल-नगाड़ों पर डांस रहे हैं। गिरिराज जी को 1008 तरह के व्यंजनों का भोग लगाया

गया। इस पर्व पर लोग घरों में भी गाय के गोबर से गिरिराज जी को बनाकर पूजा किया। इसके साथ ही नए अनाज से बने कई तरह के पकवान बनाकर उनको भोग लगाते हैं। जिसे अन्नकूट कहते हैं। इस दौरान भक्त गिरिराज जी की में तो गोवर्धन कु जाऊं मेरे पीर नाय माने मेरो मनवा गीत गाकर आराधना कर रहे हैं। सुबह गोवर्धन नाथ का दूध से अभिषेक किया गया।

बांधवगढ़ में 10 हाथियों की मौत

नेता प्रतिपक्ष ने बोला हमला; वन मंत्री प्रचार में व्यस्त, सरकार एक्शन ले

भोपाल(नप्र)। बांधवगढ़ नेशनल पार्क में हाथियों की मौत के मामले पर सियासत शुरू हो गई है। नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने वन मंत्री और सरकार पर हमला बोला है। सिंघार ने कहा कि दीपावली के पावन पर्व पर एक बड़ी दुखद घटना सामने आई। 10 हाथी मर गए लेकिन सरकार चुप है।

गणेश जी के स्वरूप की रक्षा नहीं कर पा रही सरकार-नेता प्रतिपक्ष ने कहा- हम भगवान की पूजा करते हैं, हिंदू धर्म में गणेश जी के रूप में हाथी को सम्मान देते हैं। निश्चित तौर से यह सरकार का अशुभ समय है। एक तरफ आप शस्त्र पूजन कर रहे हो, दूसरी तरफ वन्य प्राणियों की रक्षा नहीं कर पा रहे हो। हाथी जिसे हम गणेश रूप में देखते हैं। सरकार उनकी रक्षा नहीं कर पा रही है। मैं कहना चाहता हूं कि सरकार के वन मंत्री वोट मांग रहे हैं लेकिन गणेश जी की पूजा भूल गए, उनके स्वरुप हाथी का ध्यान रखना भूल गए।

सरकार संज्ञान लेकर कार्रवाई करे-उमंग सिंघार ने कहा- यह बड़ी दुख घटना है, इस घटना पर तत्काल सरकार को संज्ञान लेना चाहिए। वहां जो आदिवासी कई सालों से रहते आ रहे हैं, उनका वन्य प्राणियों से पुराना संबंध रहा है। यह हाथी झारखंड के पलामू से आते रहे। कुछ कर्नाटक से आते रहे लेकिन मुझे यह जानकारी मिली है कि पिछले 4 सालों से वह लोग यहीं रहने लग गए, इन लोगों ने होम रेंज बना लिया। इस होम रेंज के अंदर सरकार ने क्या किया? क्या उन वन समितियां से बात की? क्या आदिवासियों से बात की? किस प्रकार से हाथियों का विस्थापन करना है?

विस्थापन के लिए सरकार ने प्रयास नहीं किए-जिन्हें हम सम्मान के रूप में देखते हैं लेकिन हम उन हाथियों के विस्थापन के लिए आदिवासियों के साथ संवाद कैसे करें, इस दिशा में सरकार ने प्रयास नहीं किया। यह सरकार और वन विभाग के

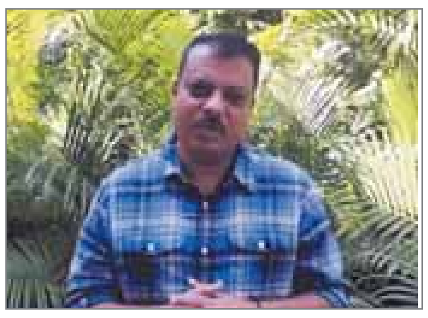

अधिकारियों का कुप्रबंधन है। पिछले इतने सालों से हाथी रहते आए, उनके विस्थापन की कभी बात नहीं की। सरकार इसमें तत्काल निर्णय ले और वन समिति और आदिवासियों को जो अधिकार हैं। उन्हें वे अधिकार मिलना चाहिए। जल-जंगल, जमीन के अधिकार मिलना चाहिए। सरकार इस मामले में चुप क्यों है। सरकार आदिवासियों की कई बातें करती है लेकिन वन्य प्राणियों और आदिवासियों के नाम पर चुप रहती है। यह सरकार आदिवासी और वन्य प्राणी विरोधी है।

श्रीनगर में उस घर को ही उड़ाया जहां छिपे थे आतंकी, तीन ढेर

● जम्मू-कश्मीर में सेना का बड़ा वार, 36 घंटे में तीन एनकाउंटर से डरे आतंकी

श्रीनगर (एजेंसी)। कश्मीर में पिछले 36 घंटे में सुरक्षाबलों और आतंकियों के बीच श्रीनगर, बांदीपोरा और अनंतनाग में 3 एनकाउंटर हुए। इनमें 4 जवान घायल हो गए और 3 आतंकी मारे गए। श्रीनगर के खान्यार में एक घर में 2 से 3 आतंकी छिपे थे। सेना ने घर को बम से उड़ा दिया है। इसमें एक आतंकी मारा गया। घटनास्थल से आतंकी की बॉडी और गोला-बारूद बरामद किए गए हैं। श्रीनगर में 2 सीआरपीएफ जवान और 2 पुलिसकर्मी भी घायल हुए हैं। 15 सितंबर 2022 के बाद यह पहली आतंकी वारदात है। तब एनकाउंटर में दो आतंकी मारे गए थे। उधर, बांदीपोरा में एनकाउंटर जारी है। वहीं अनंतनाग में शनिवार को सुरक्षाबलों ने एनकाउंटर में 2 आतंकियों को ढेर कर दिया। शांगुस लार्नू के जंगल में सुरक्षाबलों और आतंकियों के बीच शनिवार सुबह एनकाउंटर शुरू हुआ था। यहां 3 आतंकियों के छिपे होने की जानकारी थी। तीनों जगहों पर सर्च ऑपरेशन जारी है। इससे पहले शुक्रवार रात को बडगाम में आतंकियों ने गैर कश्मीरियों पर हमला किया था। इसमें क्क के दो लोग घायल हुए, जिनका अस्पताल में इलाज चल रहा है। ये बडगाम में जल जीवन प्रोजेक्ट में काम कर रहे थे। अधिकारियों ने बताया,जैसे ही सुरक्षा बल छिपे हुए आतंकवादियों के करीब पहुंचे, उन्होंने सुरक्षा बलों पर गोलीबारी शुरू कर दी। सुरक्षाबलों ने भी जवाबी फायरिंग की। श्रीनगर शहर के पुराने शहर के बीचो-बीच यह मुठभेड़ हुई।

करोंद मंडी में 4 नवंबर को मुहूर्त के सौदे

भाई-दूज पर मुहूर्त नहीं, रविवार को छुट्टी रहेगी; 5 दिन बाद खुलेगी मंडी

भोपाल (नप्र)। भोपाल की करोंद अनाज मंडी में 4 नवंबर को मुहूर्त के सौदे होंगे। अमूमन भाई-दूज के दिन मंडी में मुहूर्त के सौदे होते हैं, लेकिन इस दिन खरीदी का मुहूर्त नहीं है। वहीं, रविवार को छुट्‌टी है। इसलिए सोमवार को किसानों से उनका अनाज खरीदा जाएगा।

भोपाल ग्रेन मर्चेंट एंड ऑयल सीड्स एसोसिएशन के प्रवक्ता संजीव जैन ने बताया, धनतेरस (बुधवार) से मंडी में कारोबार बंद हो गया। 3 नवंबर, रविवार तक मंडी बंद रखी जाएगी। 4 नवंबर की सुबह 9 बजे से मुहूर्त के सौदे होंगे। वहीं, दीवाली मिलन समारोह भी रखा गया है।

सबसे पहले खरीदी जाने वाली उपज के अच्छे मिलते हैं दाम

दिवाली के मौके पर व्यापारी अपना कारोबार बंद रखते हैं और भाई-दूज पर मुहूर्त के सौदे करते हैं। सबसे पहले जिस किसान की उपज खरीदी जाती है, उसकी व्यापारी ज्यादा बोली लगाते हैं। इससे किसान को अच्छे दाम मिलते हैं। यही कारण है कि मुहूर्त के सौदे में अपना अनाज बेचने के लिए बड़ी संख्या में किसान एक-दो दिन पहले से ही मंडी में पहुंच जाते हैं।

शाइना एनसी को इम्पोर्टेड माल कहने पर सावंत ने मांगी माफी

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव के लिए मुंबा देवी सीट से शिवसेना उम्मीदवार शाइना एनसी को इम्पोर्टेड माल कहने वाले शिवसेना यूबीटी गुट के अरविंद सावंत ने माफी मांग ली है। सावंत ने कहा है कि उनका कभी किसी की भावनाओं को ठेस पहुंचाने का इरादा नहीं था। सावंत के शाइना एनसी को लेकर दिए गए आपत्तिजनक बयान के बाद बवाल मच गया था और शाइना ने उनके खिलाफ एफआईआर भी दर्ज करवाई थी। सावंत ने मीडिया से बात करते हुए कहा,पिछले एक दिन से ऐसा माहौल बनाया जा रहा है कि मैंने एक महिला का अपमान किया है, जोकि मैंने अपने जीवन में ऐसा कभी नहीं किया। मुझे जानबूझकर अलग अर्थ देकर निशाना बनाया जा रहा है।

सपा का पलटवार,पोस्टरों के जरिए यूपी को साधने की है तैयारी, संघ और पीएम मोदी योगी के साथ

‘बंटेंगे तो कटेंगे’ बयान पर उफान पर यूपी की सियासत

लखनऊ (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश की राजनीति में इन दिनों पोस्टर वार देखने को मिल रहा है। जिसके जरिए यूपी की राजनीति को साधने की कोशिश की जा रही है। समाजवादी पार्टी ने एक बार फिर से पोस्टर जारी किया है। इसमें उन्होंने ‘जुड़ेंगे तो जीतेंगे’ का नाम दिया है। समाजवादी पार्टी के इस पोस्टर को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के ‘बंटेंगे तो काटेंगे’ बयान पर पलटवार के रूप में देखा जा रहा है। अखिलेश यादव के ‘जुड़ेंगे तो जीतेंगे’ के पोस्टरों को राजधानी लखनऊ की सड़कों पर लगाया गया है। बता दें, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने पिछले दिनों आगरा की

जनसभा में ‘बंटेंगे तो काटेंगे’ का नारा दिया था। इसके बाद विपक्ष ने सीएम योगी के इस नारे की जमकर आलोचना की तो वहीं मथुरा की बैठक में आरएसएस ने सीएम योगी के इस बयान का समर्थन किया। वहीं दीवाली के मौके पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुजरात में एक जनसभा के दौरान कहा कि ‘एक हैं तो सेफ हैं’। इसे भी बंटेंगे तो कटेंगे के विस्तार के तौर पर देखा जा रहा है। आरएसएस की मथुरा बैठक के दौरान मीडिया को संबोधित करते हुए वरिष्ठ आरएसएस नेता दत्तात्रेय होसबाले ने कहा है कि हिंदू एकता सभी की भलाई के लिए आवश्यक है।

दूसरे सौदों पर भी गहराए संकट के बादल!

अमेरिका ने तेजस को लटकाया, भारत ने ठोका जुर्माना

वॉशिंगटन (एजेंसी)। भारत और अमेरिका के बीच लड़ाकू विमान और जेट के इंजन को लेकर डील खटाई में पड़ती दिख रही है। भारत ने स्वदेशी लड़ाकू विमान लाइट कॉम्बैट एयरक्राफ्ट एलसीए1ए के लिए इंजन देने में विफल रहने के लिए अमेरिकी एयरो-इंजन निर्माता जीई एयरोस्पेस पर जुर्माना लगाया है। भारतीय वायुसेना को इस देरी से परेशानी हुई है क्योंकि एलसी तेजस इससे अधर में लटक गया है। वहीं रक्षा आपूर्तिकर्ता के रूप में अमेरिका की विश्वसनीयता पर भी सवाल उठे हैं। अमेरिका से मीडियम मल्टी रोल कॉम्बैट एयरक्राफ्ट पर भी भारत की बात मुश्किल दिख रही है। यूरेशियन टाइम्स की रिपोर्ट कहती है कि भारत अमेरिकी लड़ाकू जेट का विकल्प चुनने से बचता रहा है, इसकी वजह लंबे समय से चल रहा अविश्वास है। हालांकि पिछले कुछ वर्षों में भारतीय वायुसेना के बेड़े में अमेरिकी हेलीकॉप्टर और परिवहन विमान शामिल हुए लेकिन अभी तक अमेरिकी लड़ाकू जेट को शामिल नहीं किया है। फिलहाल भारत की अमेरिका से 114 मीडियम मल्टी रोल कॉम्बैट एयरक्राफ्ट (एमआरएफए) पर बात चल रही है। अमेरिकन कंपनी लॉकहीड मार्टिन एफ-16 का एडवांस वर्जन एफ-21 पेश कर रही है। बोइंग ने एम-18 ब्लॉक सुपर हॉर्नेट और वी-15 की पेशकश की है। इसके अलावा भारत के पास फ्रांसीसी राफेल और स्वीडिश एक्यू-39 ग्रिपेन का भी विकल्प है। वायुसेना को 126 लड़ाकू विमानों की आपूर्ति के लिए मीडियम मल्टी रोल कॉम्बैट एयरक्राफ्ट के रूप में पिछली बार भारत ने फ्रांस के राफेल को चुना था। भारत फाइटर जेट स्क्वाड्रन की कमी से जूझ रहा है। भारत के पास केवल 31 फाइटर जेट स्क्वाड्रन हैं, जबकि 42 स्क्वाड्रन होने चाहिए।

सरकार ने 114 मल्टी-रोल फाइटर एयरक्राफ्ट के लिए एयरफोर्स की आवश्यकता को माना है। भारत इन जेट्स की खरीदारी को लेकर उत्सुक है लेकिन चीजें फाइनल होती नहीं दिख रही हैं। भारत को अमेरिका से एयरक्राफ्ट मिलने पर अभी कुछ तय नहीं है। अगस्त 2021 में हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड ने अमेरिकन कंपनी जीई के साथ सौदा किया था। 2023 में दोनों देशों ने 98 किलो-न्यूटन थ्रस्ट एम-414 इंजन बनाने के लिए एक समझौते पर हस्ताक्षर किए, जो एलसीए तेजस को मजबूत करेंगे। जीई एयरो-इंजन के लिए सौदे को दोनों देशों के बीच साझेदारी में एक नए युग की शुरुआत के रूप में देखा गया था। हालांकि अब इसको दो साल हो गए हैं और अभी तक एक भी इंजन भारत को नहीं मिल सका है। भारत और अमेरिका के हथियार डील का इतिहास अच्छा नहीं रहा है। भारत ने 1962 में चीन से लड़ाई के दौरान पहली बार लड़ाकू विमानों के लिए अमेरिका से संपर्क किया था लेकिन उसे विमान नहीं मिले। इसके बाद अमेरिका में 1965 में पाकिस्तान को जेट देकर मदद की। वहीं भारत ने 1962 के बाद रूस से हथियार खरीदने शुरू किए, जो सिलसिला आज तक जारी है।

रूस और ईरान की दोस्ती से डरे इजरायल और अमेरिका!

मॉस्को के प्लान से और ताकतवर होगा शिया समुदाय का मुल्क

यरुशलम (एजेंसी)। रूस लंबे समय से मध्य पूर्व की घटनाओं से खुद रखने का प्रयास करता रहा है, लेकिन 7 अक्टूबर के बाद बनी नई स्थिति इसे पहले से कहीं अधिक कठिन बना दिया है। ईरान के साथ रूस के बढ़ते रक्षा संबंधों ने इसे और पेचीदा बना दिया है। साल 2022 में यूक्रेन पर हमले के बाद से रूस और ईरान के रक्षा संबंध बड़ी छलांग लगा चुके हैं। यूक्रेन पर हमले ने मॉस्को को ईरान के साथ सैन्य साझेदारी को प्रेरित किया है, लेकिन ये दोस्ती अब अमेरिका और इजरायल के लिए गंभीर चिंता की वजह बन चुकी है। रूस न केवल ईरान को अपनी सुरक्षा मजबूत करने में सहायता दे रहा है, बल्कि वह तेहरान से ड्रोन और मिसाइल जैसे उच्च तकनीक वाले हथियारों की खरीद कर उसे धन भी मुहैया कर रहा है, जिससे कट्टर शिया मुल्क को क्षेत्र में अपने प्रॉक्सी के जरिए हिंसा फैलाने में मदद मिल रही है। ईरान ने ड्रोन इंडस्ट्री में काफी तरक्की की है। उसने रूस को यूक्रेन पर हमले के लिए बड़ी संख्या में यूएवी दिए हैं। अमेरिकी विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन ने 10 सितम्बर को कहा कि ईरान ने अब रूस को फतह 360 मिसाइलें दी हैं और संभवतः कुछ हफ्तों के भीतर यूरोप में यूक्रेन के खिलाफ उनका उपयोग करेगा। ब्लिंकन ने जोर देकर कहा कि ये मिसाइलें यूरोपीय सुरक्षा के लिए खतरा हैं और संभवतः कम दूरी के लक्ष्यों के खिलाफ दागी जाएंगी।

संक्षिप्त समाचार

कनाडा ने पहली बार कहा-भारत खतरा पैदा करने वाला देश

● नॉर्थ कोरिया-ईरान समेत 5 देशों की लिस्ट में किया शामिल,कनाडा-इंडिया संबंधों में विवाद जारी

ओटावा (एजेंसी)। कनाडा की जासूसी एजेंसी कम्युनिकेशन सिक्योरिटी एस्टैब्लिशमेंट ने खतरा पैदा करने वाले देशों की सूची में भारत को शामिल किया है। मीडिया रिपोर्ट्स के

मुताबिक, यह पहली बार है, जब कनाडा सरकार की इस लिस्ट में भारत का नाम आया है। दरअसल, एजेंसी के साइबर विभाग ने 31 अक्टूबर को रिपोर्ट जारी की। इसमें 2025-26 में खतरा पैदा करने वाले देशों के नाम हैं। इस लिस्ट में भारत को चीन, रूस, ईरान, उत्तर कोरिया के बाद पांचवें नंबर पर रखा गया है। गवर्नमेंट ऑफ कनाडा की ऑफिशियल वेबसाइट पर यह लिस्ट मौजूद है। कनाडा बोला- तनाव की वजह से साइबर घटनाओं को बढ़ावा मिला। रिपोर्ट में कह कि भारत सरकार आधुनिक साइबर प्रोग्राम तैयार कर रही है।

आदिवासी महिला ने पुलिस में दर्ज कराई प्रताड़ना की शिकायत

भोपाल। होशंगाबाद रोड स्थित कोरल वुड्स सोसायटी मिसरोद की महिला गार्ड द्वारा सोसायटी निवासी एक व्यक्ति के विरुद्ध जातिसूचक शब्दों का इस्तेमाल कर अपमान करने और धमकी देने की शिकायत मिसरोद थाने में दर्ज कराई है। प्राप्त जानकारी अनुसार वैष्णवी गोंड कोरल वुड्स सोसाइटी होशंगाबाद रोड मिसरोद में लेडी गार्ड के रूप में कार्यरत है और विभिन्न जानकारी प्रेषित करने के लिए सोसायटी के ग्रुप में जुड़ी हुई है। पुलिस को की गई शिकायत में उन्होंने बताया है कि विगत दिवस सोसायटी में ब्लॉक ए4 के 404 में रहने वाले एसवी आर नायडू ने उन्हें अपमानित करने के उद्देश्य से व्हाट्सएप ग्रुप में उसकी तुलना रोहिंग्या मुसलमान से की। महिला ने जब इस बारे में श्री नायडू से बात करने की कोशिश की और कहा आपने मुझे रोहिंग्या मुसलमान क्यों कहा तो वे बद्तमीजी पर उतर आए एवं उनके द्वारा जाति सूचक शब्दों का इस्तेमाल करते हुए धमकाया। महिला का कहना है कि यह प्रभावशाली लोग हैं और मेरे खिलाफ कुछ भी करने में सक्षम है। महिला ने अपने आवेदन में इस बात का भी उल्लेख किया है कि कोरल वुड्स व्हाट्सएप ग्रुप के एकमात्र एडमिन हेड राजेंद्र मालवीय ब्लॉक बी 1303 हैं उन्हें भी मामले से अवगत कराए जाने के बाद उनके द्वारा भी अपमानजनक मैसेज के संदर्भ में कोई कार्रवाई नहीं की गई और न ही मैसेज को डिलीट करते हुए श्री नायडू को ऐसा नहीं करने को कहा गया। महिला ने शिकायती पत्र देते हुए कानूनी कार्रवाई करने की मांग की है। इस मामले में श्री नायडू से बात करने का प्रयास किया गया लेकिन उनसे बात नहीं हो सकी है।

एकात्म संवाद का आयोजन आज से

भोपाल। आचार्य शंकर सांस्कृतिक एकता न्यास द्वारा 3 नवंबर को सायं 06 :00 बजे से भारत भवन, भोपाल में ‘एकात्म संवाद‘ का आयोजन किया जा रहा है। ‘एकात्म संवाद‘ में स्वामिनी विमलानन्द सरस्वती जी, प्रमुख चिन्मय मिशन कोयम्बटूर के साथ दुबई, यूएई में न्यूरोलॉजिस्ट एवं माई ब्रेन डिजाइन की संस्थापक डॉ. श्वेता अदातिया संवाद करेंगी।

दिनांक 04 नवम्बर 2024 से 06 नवम्बर 2024 तक भारत भवन, भोपाल में पहली बार अनूठे एवं नवीन सन्दर्भ में नृत्य में अद्वैत विषय पर तीन दिवसीय कार्यशाला होगी, जिसमें नृत्य से जुड़े विविध सत्र आयोजित होंगे, जिसमें विश्व प्रसिद्ध भरतनाट्यम नृत्यांगना पद्म विभूषण डॉ. पद्मा सुब्रमण्यम, नृत्यांगना डॉ.पद्मजा सुरेश, केंद्रीय संगीत नाटक अकादमी की अध्यक्ष डॉ. संध्या पुरेचा, कला मर्मज्ञ डॉ.राधावल्लभ त्रिपाठी सहित 60 नृत्य अध्येता एवं कलाकार सम्मिलित होंगे। यह कार्यशाला प्रतिदिन प्रात : 09 :00 बजे से रात्रि 08 :00 बजे तक चलेगी, जिसमें प्रतिदिन शाम 07 :00 से 08 :30 बजे तक कला रसिकों के लिए विशेष सत्र आयोजित होगा, इस सत्र में शहर के कलाप्रेमी, शोधार्थी एवं जिज्ञासु शामिल हो सकते है।

इंदौर में तैयार हो रहे आईएसबीटी का काम 95 प्रतिशत पूरा

100 करोड़ की लागत से 15 एकड़ में बन रहा फुली एयरकंडीशन बस स्टैंड; दिसंबर से शुरू होगा

इंदौर (एजेंसी) । शहर के कुमेड़ी में इंदौर विकास प्राधिकरण द्वारा तैयार किए जा रहे इंटर स्टेट बस टर्मिनल (आईएसबीटी) का 95 प्रतिशत काम पूरा हो चुका है। ये शहर का पहला फुल एयर-कंडीशन बस स्टैंड होगा। यहां से करीब 1440 बसों का संचालन किया जा सकेगा। टर्मिनल से रोजाना 60 हजार यात्री सफर कर सकेंगे। वातानुकूलित टर्मिनल में 500 यात्रियों के बैठने की व्यवस्था रहेगी। शहर में तैयार हो रहा नया बस स्टैंड उज्जैन में होने वाले सिंहस्थ-2028 के लिहाज से भी बहुत ही उपयोगी होगा। आईडीए द्वारा कुमेड़ी में 15 एकड़ में बनाया जा रहा इंटर स्टेट बस टर्मिनल के फाइनल टच का काम जारी है। अधिकारियों के अनुसार रोजाना 1300 बसों के आने का अनुमान है। यात्रियों की संख्या करीब 60 हजार रहेगी। आईएसबीटी का 95 पर्सेंट काम पूरा हो चुका है। टर्मिनल की मेन बिल्डिंग बन कर तैयार हो चुकी है। बसों के संचालन वाला हिस्सा भी तैयार है। परिसर में लाइट का काम तेजी से हो रहा है। बस टर्मिनल का 95 प्रतिशत काम पूरा होने के साथ फाइनल टच

का काम तेजी से किया जा रहा है।

बस स्टैंड पर ड्राइवर-कंडक्टर सहित अन्य स्टाफ के लिए अलग से बिल्डिंग बनाई गई है। जिसमें रेस्ट रूम, पीने के पानी, टॉयलेट आदि की व्यवस्था है। ट्रैवल संचालकों के लिए भी 32 ऑफिस बनाए गए हैं। 100 करोड़ की लागत से तैयार हो रहे इस टर्मिनल में यात्रियों के लिए सभी आधुनिक सुविधाएं जुटाई जा रही है।

यात्रियों के लिए रहेंगे 14 टिकट काउंटर- आईएसबीटी में बसों की पार्किंग की विशेष सुविधा रहेंगी। बसों के आने-जाने की व्यवस्था भी अलग-अलग होगी। यात्रियों के लिए 14 टिकट काउंटर रहेंगे। बसों में यात्रियों को बैठने और उतरने के लिए 43 प्लेटफार्म तैयार किए गए हैं। बस स्टैंड पर रेस्टोरेंट, एटीएम, सहित अन्य सामग्री के लिए 32 दुकानें बनाई गई है।

10 सितंबर को नायता मुंडला आईएसबीटी शुरू हुआ, लोक परिवहन महंगा पड़ रहा

नायता मुंडला बस स्टैंड का संचालन 10 सितंबर से शुरू किया गया था। यहां से प्रारंभिक तौर पर 30 बसों के साथ महाराष्ट्र और गुजरात रूट का संचालन शुरू हुआ। प्रशासन को अनुमान था कि जल्द ही 100 से 150 बसों का संचालन यहां से शुरू हो जाएगा। एआईसीटीएसएल व निजी ट्रेवल संचालकों द्वारा कुछ दिन तक तो बसें चलती रहीं। वर्तमान में यहां तीन-चार बसें ही नजर आती हैं। शेष बसें यात्रियों को अलग-अलग स्थानों पर छोड़कर अपने निजी डिपो में चली जाती हैं। शाम को जाने के समय वहीं से कुछ तय स्थानों से यात्रियों को लेकर संचालित की जा रही हैं। इसकी बड़ी वजह बस स्टैंड तक आवाजाही के लिए एप्रोच रोड का आधा अधूरा बनना है। दूसरा यात्रियों को बड़ी असुविधा होती है। लोक परिवहन पर बड़ी राशि खर्च होती है।

इंदौर हाई कोर्ट बार एसोसिएशन चुनाव

सोशल मीडिया पर जमकर प्रचार, अब संभावित दावेदार करेंगे वोटर से वन टू वन मुलाकात

इंदौर (एजेंसी) । हाई कोर्ट बार एसोसिएशन की वर्तमान कार्यकारिणी का कार्यकाल 24 नवंबर को समाप्त हो रहा है। संभावना जताई जा रही है कि आने वाले 15 दिन में चुनाव की घोषणा हो सकती है। साथ ही वार्षिक चुनाव नवंबर महीने के आखिर तक हो सकते हैं। दरअसल चुनाव को लेकर संभावित प्रत्याशी पहले ही मैदान संभाल चुके हैं और सोशल मीडिया पर प्रचार शुरू कर दिया है। पिछले दिनों लगातार दावेदारों की पोस्ट वायरल हुई हैं। दिवाली के बाद अब अगले सप्ताह सोमवार से नियमित कामकाज शुरू होगा। इसी के साथ दावेदार का वोटर से मिलने-जुलने का दौर भी शुरू हो जाएगा। आमने-सामने मिल प्रत्याशी वोटर्स का मन टटोलेंगे साथ ही वोट की अपील भी करेंगे।

3 हजार से ज्यादा सदस्य

हाई कोर्ट बार एसोसिएशन में 3 हजार से ज्यादा सदस्य हैं लेकिन 'वन बार वन वोट' सिद्धांत के

लागू होने के बाद मतदाताओं की संख्या करीब 1800 रह गई है। पिछले साल 22 नवंबर को वोटिंग हुई थी और 24 नवंबर को कार्यकारिणी ने कामकाज संभाला था, ये काफी प्रतिष्ठित चुनाव होता है। प्रदेश भर में इसकी चर्चा रहती है, अध्यक्ष पद सहित अन्य महत्वपूर्ण पदों के लिए 4 से 5 दावेदार संभावित हैं।

पिछले साल ये चुने गए थे पदाधिकारी

अध्यक्ष - रितेश इनानी
उपाध्यक्ष - यशपाल राठौर
सचिव - भुवन गौतम
सह सचिव - शशांक शर्मा
कार्यकारिणी सदस्य - तेजस व्यास, अरुण सिंह चौहान, धर्मेंद्र साहू, विशाल सोनी, प्रभात पांडे

जल्द होगी कार्यकारिणी की बैठक

समय से पहले चुनाव कराए जाने की कोई संभावना नहीं है। जल्द ही कार्यकारिणी की बैठक बुलाकर इस संबंध में निर्णय ले लिया जाएगा। रितेश इनानी, हाई कोर्ट बार एसोसिएशन के वर्तमान अध्यक्ष।

इंदौर में 53 गोशालाओं में गोवर्धन पूजा हुई

मंत्रियों सहित कई जनप्रतिनिधि हुए शामिल

इंदौर (एजेंसी) । इंदौर में शनिवार, 2 नवंबर को गोवर्धन पूजा पर जिले की 53 गोशालाओं में कार्यक्रम हुए। इन कार्यक्रमों में नगरीय प्रशासन और आवास मंत्री कैलाश विजयवर्गीय, जल संसाधन मंत्री तुलसीराम सिलावट सहित विधायक और अन्य जनप्रतिनिधि हुए।। इंदौर में यह पहली बार हो रहा है, जब इस तरह के आयोजन गोशालाओं में एक साथ हुए। विधायक मनोज पटेल देपालपुर की गो सेवा समिति 24 अवतार मंदिर के कार्यक्रम में, रमेश मेंदोला नंदा नगर स्थित साई नाथ गोशाला के कार्यक्रम में और विधायक महेंद्र हार्डिया एबी रोड स्थित मां आनंदमयी गौशाला द्वारा आयोजित गोवर्धन पूजा के कार्यक्रम में शामिल होंगे। गोशालाओं में कार्यक्रम आयोजन के लिए नोडल अधिकारी भी नियुक्त किए गए हैं।

बेटी पर भद्दे कमेंट करने से रोका तो मारपीट की

पिता की शिकायत पर पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ केस दर्ज किया

इंदौर (एजेंसी) । पिता के साथ जा रही बेटी पर आरोपियों के द्वारा भद्दे कमेंट किए गए। पिता ने विरोध किया आरोपी मारपीट करने लगे। पुलिस ने पिता की शिकायत पर कार चालक व उसके साथियों के खिलाफ केस दर्ज किया है। पलासिया थाना पुलिस ने फरियादी आनंद खण्डेलवाल उम्र 43 साल निवासी सरस्वती नगर अन्नपूर्णा रोड़ की शिकायत पर कार के चालक व उसके अन्य दो साथियों के खिलाफ केस दर्ज किया है। घटना साकेत चौराहे के पास की है। फरियादी ने पुलिस को बताया कि कार चालक और उसके अन्य दो साथी मुझे देखकर कमेन्ट करने लगे। मैंने उन्हें कहा की यहां मेरी लड़की है। आप इस तरह से क्यों बोल रहे हो। इसी बात को लेकर कार का चालक व उसके अन्य दो साथी कार से उतरकर आए। तीनों गालियां देने लगे। मना करने पर मारपीट की।

11 सालों में सबसे गर्म रहा नवम्बर का पहला दिन

34 डिग्री से ज्यादा रहा तापमान; इंदौर में 2-3 दिन ऐसा ही रहेगा मौसम

इंदौर(एजेंसी) । इंदौर में नवम्बर माह की शुरुआत में तापमान सामान्य रहता है, लेकिन अभी मिजाज अलग ही है। इस बार पहले ही दिन तापमान 34 डिग्री से ज्यादा रहा। यह बीते 11 सालों में सबसे ज्यादा है। इसके पूर्व 2015 में 34 डिग्री रिकॉर्ड किया गया था। रातें भी अभी गर्म हैं। बीती रात तापमान 18 डिग्री से ज्यादा रहा। मौसम वैज्ञानिकों के मुताबिक अभी दो-तीन दिन ऐसा ही मौसम रहेगा। दूसरे हफ्ते में रात के तापमान में हल्की गिरावट शुरू हो जाएगी। दरअसल, दक्षिण-मानसून के समाप्त हो जाने के बाद नवम्बर में इंदौर का मौसम सामान्यतः शांत होता है। इस माह रात के तापमान में ज्यादा गिरावट देखने को मिलती है। इस दौरान मानसून की आर्द्र हवाओं की जगह उत्तरी हवाएं ले लेती हैं। सुबह की हवाएं सुहानी होती है। उत्तरी भारत से होकर जाने वाले वेस्टर्न डिस्टर्बेंस के प्रभाव से कभी-कभी बौछारें होती है।

छत्रीपुरा विवाद में 4 लोग हिरासत में,12 को बनाया आरोपी

दो पक्षों में जमकर हुआ था पथराव, भीड़ ने गाड़ियों के कांच फोड़े थे

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के छत्रीपुरा विवाद में चार नामजद आरोपियों को पुलिस ने हिरासत में लिया है। अन्य आरोपियों की तलाश की जा रही है। पुलिस ने मामले में 12 लोगों को आरोपी बनाया है।

डीसीपी ऋषिकेश मीणा ने बताया कि, विवाद के बाद क्षेत्र में स्थिति सामान्य है। नियंत्रण में है। मामले में दो एफआईआर की गई है। जिसमें बारह नामजद आरोपी बनाए गए हैं। कुछ असामाजिक तत्वों के द्वारा शहर का वातावरण बिगाड़ने की कोशिश की गई। दोनों पक्षों के लोगों से भी बातचीत की गई। बच्चों की लड़ाई को बिना वजह का तुल दिया गया। जहां विवाद हुआ है। वहां पहले की तरह स्थिति सामान्य है। पुलिस ने कुछ वीडियोग्राफी करवाई थी। कुछ सीसीटीवी फुटेज भी खंगाल रहे हैं।

पटाखे फोड़ने की बात पर दो पक्षों में हुआ था विवाद

शुक्रवार को छत्रीपुरा थाने से महज 150 मीटर दूर रविदासपुरा में दोपहर 1.45 बजे दो बच्चियां पटाखे चला रही थी। तभी सामने रहने वाले सलमान और शानू उन्हें गालियां देने लगे। बच्चियों की मां से भी झगड़ा किया। इसके बाद विवाद बढ़ गया। दोनों ओर से जमकर पथराव होने लगे। भीड़ ने 15 वाहनों और धर्मस्थलों में तोड़फोड़ की। एक ऑटो रिक्शा और एक कार में भी आग लगा दी। मौके पर पहुंची पुलिस ने भीड़ को खदेड़ा। 6 थानों का फोर्स और रिजर्व बल बुलाया तब स्थिति नियंत्रण में आई। जानकारी मिलने पर हिंदू संगठनों के कार्यकर्ता छत्रीपुरा थाने पहुंचे गए।

13 साल की बच्ची की शिकायत पर सलमान अयान और शानू पर छेड़छाड़, मारपीट व धमकाने का केस दर्ज किया गया। घटना में एक पक्ष के पांच और दूसरे की ओर से एक महिला सहित चार लोग घायल हुए। पुलिस के द्वारा फुटेज के आधार पर उपद्रवियों पर भी कार्रवाई की जाएगी।

गर्भवती हूं फिर भी धक्का दिया, महिलाओं ने भी की मारपीट- महिला ने बताया, बच्चियों की शिकायत पर मैं सलमान और शानू से बात करने गई। मैं सात माह की गर्भवती हूं फिर भी उन्होंने धक्का दिया। महिलाओं ने मारपीट की। आरोपियों ने अभद्रता की और झूमाझटकी करने लगे। पास में रहने वाले तरुण अग्रवाल ने आपत्ति ली तो उन पर पत्थर चलाए। उनके कंधे और कान में चोट लगी।

दिवाली के दिन घर में आग लगाई थी

घायल राशिदा बी ने बताया कि, परसों रात में दिवाली के दिन घर में आग लगाई थी। वो हमने बुझा दी थी। हम लड़ाई नहीं करना चाहते थे। दूसरे दिन पटाखे घर में फेंकने लगे तो विरोध किया तो 40-50 लोगों ने एक लड़के को बहुत मारा। हम तीन लेडिस बचाने निकले तो आरोपियों ने तलवार और बल्ली से हमला किया और खून में नहला दिया। हम जब रिपोर्ट दर्ज करवाने थाने आए तो यहां 300 लोगों ने थाना घेर रखा था। सुरेश गोदला और उसके लोग थे। उनके लड़के थे। हमारे घर में पटाखे फेंक रहे थे, उसे लेकर ही विवाद हुआ था। एक महिला के पैर में फेक्कर आ गया। मारने वाले पुरुष थे। रविदासपुरा के लोग थे। बच्ची पटाखा फोड़ रही थी और मना किया तब विवाद हुआ ये झूठ है। वहां कैमरे लगे है, देख लीजिए पता चल जाएगा।

सीएम बोले-सुशासन की व्यवस्था में पटाखे जलाने से रोकना अनुचित

घटना को लेकर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा था कि, इंदौर में कुछ बच्चों एवं अन्य लोगों को पटाखे जलाने से रोका गया, जो अनुचित है। कोई भी व्यक्ति कानून अपने हाथ में लेने का प्रयास नहीं कर सकता। यदि कोई अपने हाथ में कानून लेता है तो वो बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। प्रदेश में कानून व्यवस्था का राज है।

सोने की चेन चुराने वाली महिला को पुलिस ने पकड़ा

सीसीटीवी में महिला दुकान से चेन चुराते हुए कैद हुई थी

इंदौर (एजेंसी) । इंदौर में सोने-चांदी की दुकान से सोने की चेन चुराने वाली महिला को पुलिस ने पकड़ा है। उसके पास से चोरी की चेन भी बरामद हुई है। महिला सीसीटीवी में कैद हो गई थी। पुलिस थाना तिलक नगर ने ज्वेलर्स की दुकान से चोरी करने वाली एक शातिर महिला चोर को पकड़ा है।

27 अक्टूबर को फरियादी अमन सोनी निवासी श्रीमंगल नगर तिलक नगर ने रिपोर्ट दर्ज करवाई थी। उसकी ट्रेजर ज्वेलर्स के नाम से 13-14 कम्युनिटी हॉल शॉपिंग कॉम्प्लेक्स तिलक नगर में सोने चांदी की दुकान है। दुकान पर पिता शरद कुमार सोनी थे। शाम लगभग

3.45 बजे दुकान पर एक अज्ञात महिला एक लड़के के साथ आई और खरीददारी के लिए सामान देखनी लगी। लगभग 15 मिनट दुकान पर रुकी लेकिन बिना सामान लिए दुकान से चली गई। शाम का लगभग 7 बजे फरियादी ने हिसाब देखा तो सोने की एक चेन बजनी 9.36 ग्राम की कम दिखाई दी। इस पर दुकान के सीसीटीवी फुटेज देखे तो जो अज्ञात महिला एक अज्ञात लड़के के साथ आई थी वो पिता शरद सोनी का ध्यान भटकने पर एक सोने की चेन चुराते हुए नजर आई।

थाना प्रभारी मनीष लोधा के निर्देशन में पुलिस थाना तिलक नगर की टीम द्वारा सीसीटीवी फुटेजों के आधार पर अज्ञात महिला की पहचान सुनिता चौहान निवासी स्कीम नं. 78 विजय नगर के रूप में की गई। पूछताछ करने पर सोने की चुराई गई चेन कीमती करीब 70,000 रुपए बरामद की गई।

इंदौर में पिता ने पीट-पीटकर की बेटे की हत्या

शराब के लिए पैसे नहीं देने पर करता था मारपीट; मृतक पर दर्ज हैं 6 केस

इंदौर (एजेंसी) । इंदौर में शराब के लिए रुपए नहीं देने पर बेटे ने माता-पिता के साथ मारपीट करने लगा। गुस्से में पिता ने मोगरी से पीट-पीटकर बेटे की हत्या कर दी। पुलिस ने पिता को गिरफ्तार कर लिया है। मृतक बेटे पर भी पहले से 6 केस दर्ज थे। कनाड़िया थाना पर 31 अक्टूबर को सूचना मिली थी कि पहाड़ी टेकरी बिचोली मर्दाना में चेतन पिता श्याम लाल नौरंग की खून से लथपथ लाश मकान में कमरे के अंदर पड़ी है। पुलिस ने मामले में मर्ग कायम कर मामले में जांच शुरू कर दी थी। जांच के दौरान पुलिस को पता चला कि चेतन की मौत सिर में आई गहरी चोट और अत्यधिक

खून बहने के कारण हुई है। मृतक के सिर पर चोट लगने के बाद खून निकला हुआ था। घटना स्थल पर चारों तरफ खून पड़ा हुआ था।

मामले में पुलिस के द्वारा मृतक चेतन के मकान में रहने वाले किराएदार और आसपास के लोगों से पूछताछ की गई। जिसमें प्रारंभिक तौर पर मृतक चेतन का शराब पीने का आदि होना और आए दिन शराब पीने के लिए पैसे मांगने की बात पर से घरवालों से मारपीट और गाली गलौज करना पाया गया। घटना वाले दिन मृतक चेतन का उसके पिता श्याम लाल उम्र 60 साल से शराब के लिए पैसे मांगने की बात पर विवाद हुआ था। घटना स्थल के निरीक्षण से भी साफ पता चल रहा था कि घटना किसी परिवार के सदस्य द्वारा ही की गई है। पिता श्यामलाल से पूछताछ की गई तो उसने कबूल किया कि बेटे चेतन द्वारा शराब के लिए पैसे मांगने की बात पर उसकी मां और उससे मारपीट की गई। गुस्से में उसने मोगरी से पीटकर चेतन की हत्या कर दी।

बड़ा गणपति पर बनेगा 23.45 करोड़ का ब्रिज

अंतिम चौराहे से शुरू होगा और जिंसी के यहां पर खत्म होगा, मेट्रो के कारण आई थी रूकावट

इंदौर (एजेंसी) । इंदौर में आईडीए एक और ब्रिज बनाने की तैयारी कर रहा है। यह ब्रिज बड़ा गणपति चौराहे पर बनाया जाएगा। इस ब्रिज के बनने से एयरपोर्ट की तरफ आने-जाने वाले वाहन चालकों को काफी सुविधा होगी। आईडीए सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार बड़ा गणपति फ्लाईओवर ब्रिज के लिए किए गए सर्वे रिपोर्ट आने के बाद आईडीए ने इस ब्रिज की टेंडर प्रक्रिया सहित अन्य तैयारियां पूरी कर ली हैं। बता दें कि तीन साल पहले गंगवाल से बड़ा गणपति होते हुए एरोड्रम तक फ्लाईओवर ब्रिज बनाने की तैयारी की गई थी, लेकिन मेट्रो प्रोजेक्ट आने के कारण फ्लाईओवर प्रोजेक्ट को निरस्त कर दिया गया था। लेकिन अब अंडरग्राउंड मेट्रो चलने के कारण यहां पर ब्रिज बनाने की तैयारी शुरू हो गई है।

आईडीए सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार बड़ा गणपति पर ब्रिज लगभग 600 मीटर लंबा और 12 मीटर चौड़ा होगा। यह फ्लाईओवर तीन लेन का बनाया जाएगा, जिसकी लागत 23 करोड़ 45 लाख रुपए होगी। बताया जा रहा है कि यह ब्रिज गंगवाल से खालसा, राजमोहल्ला चौराहा से महेश नगर, अंतिम चौराहे होते हुए बड़ा गणपति तक बनाया जाएगा। वहीं, ब्रिज अंतिम चौराहे की तरफ से जिंसी की तरफ उतरेगा। इस

फ्लाईओवर से एयरपोर्ट रोड की तरफ आने वाला यातायात बिना बाधा के पोलोग्राउंड की तरफ निकल जाएगा। बता दें कि आईडीए ने इस ब्रिज के लिए टेंडर प्रक्रिया शुरू कर दी है। इस ब्रिज के लिए टेंडर प्रक्रिया अगले महीने यानी नवंबर माह में पूरी कर ली जाएगी।

प्रतिदिन लगभग 1 लाख वाहनों की आवाजाही रहती है

आईडीए द्वारा कराए गए सर्वे के मुताबिक खालसा कॉलेज से जिंसी की ओर प्रति घंटे 3000 वाहन आते हैं। ब्रिज के बनने से यह दबाव काफी हद तक कम हो जाएगा। आईडीए की सर्वे रिपोर्ट के अनुसार बड़ा गणपति चौराहे से प्रतिदिन लगभग 1 लाख वाहनों की आवाजाही होती है। यानी हर घंटे 10 हजार वाहन आते-जाते हैं।

इस चौराहे पर सुबह करीब 11 बजे से दोपहर एक बजे तक तथा शाम को 5 बजे से 8 बजे तक वाहनों का सर्वाधिक दबाव रहता है। इस फ्लाईओवर पर दोनों तरफ फुटपाथ भी बनाए जाएंगे।

इंदौर-उज्जैन मेट्रो की डीपीआर के लिए दो महीने का टारगेट

एक हजार करोड़ रुपए होगी प्रोजेक्ट की अनुमानित लागत,बायपास विकास प्लान भी मंजूर

इंदौर (एजेंसी) । सिंहस्थ-2028 और उज्जैन रोड पर हो रहे विकास को देखते हुए इंदौर-उज्जैन के बीच मेट्रो ट्रेन प्रस्तावित है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने हाल ही में सिंहस्थ के लिए हुई मंत्री समूह की बैठक में इसकी डीपीआर तैयार करने के लिए कहा है। यह कार्य दो महीने में पूरा करके इस पर निर्णय लिया जाएगा। बताया जा रहा है कि इस प्रोजेक्ट को बनाने में करीब 7 हजार करोड़ रुपए के खर्च का अनुमान है। इंदौर से मेट्रो को रिंग रूट के साथ ही उज्जैन तक भी चलाने की कवायद एक साल से चल रही है। मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन ने इंदौर से उज्जैन और पीथमपुर, देवास के बीच मेट्रो के लिए फिजिबिलिटी सर्वे कर रिपोर्ट तैयार की थी। प्रोजेक्ट से धार्मिक पर्यटन के लिए आने वाले यात्रियों के लिए आसानी होगी। 58 किमी के कॉरिडोर में 7 स्टेशन प्रस्तावित हैं।

मेट्रो ट्रेन यह दूरी करीब 50 से 60 मिनट में तय कर लेगी।

बायपास विकास प्लान भी मंजूर

इधर, सरकार ने बायपास पर हो रहे आवासीय विकास को देखते हुए इसका नया विकास प्लान मंजूर कर दिया है। बायपास के कंट्रोल एरिया की जमीनों के लिए लैंड यूज में बदलाव करते हुए इसके मिश्रित उपयोग की अनुमति दी जाएगी। इस पहल से बायपास के दोनों ओर सर्विस लेन फोर लेन हो जाएगी, जो वर्तमान में टू लेन है।

कला

पंकज तिवारी
कला समीक्षक

भारतीय कला, हैवेल और हैवेल से पूर्व के कलाकार

भारत के लोग जब भयावह स्थिति से गुजर रहे थे, अंग्रेजों और राजाओं के बीच हो रहे उठापटक से जूझ रहे थे, लोगों में रह-रहकर जन चेतना के ज्वार उठ रहे थे।

ऐसे ही समय में अंग्रेजी कलाकारों का भारत आगमन चालू हो चुका था। उनके यहां आने का कारण भी बिल्कुल ही साफ था। अंग्रेजी मानसिकता की यदि बात करी जाय तो सिद्ध हो जाएगा कि वो बिना फायदा देखे एक कदम भी आगे नहीं बढ़ते थे। फिर भी यदि भारतीय आधुनिक या समकालीन कला के विकास की बात देखी जाए तो यहां भी वहीं से शुरू करना पड़ेगा। हालांकि समय में अंतर जरूर देखा जा सकता है पर प्रक्रिया लगभग हर जगह एक सी ही है। भारतीय कला धार्मिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक विषयों में ही जकड़ी हुई थी या फिर राजाओं के दिए विषयों तक सीमित थी जबकि आधुनिक भारतीय कला में बहुत बड़ा परिवर्तन देखने को मिला।

रॉयल एकेडमी ऑफ आर्ट्स, बर्लिंगटन हाउस लंदन जो एक कला संस्थान है, जिसकी स्थापना 1768 में हुई और जिसके पहले अध्यक्ष जोशुआ रेनाल्ड्स बनाए गये। जहां के बनाए नियम एवं कार्य शैली या पाठ्यक्रम के आधार पर ही आगे चलकर भारतीय कला संस्थानों को खोला गया, जहां उसी आधार पर बहुत समय तक चित्र बनते रहे जिस पर आगे चर्चा होनी है फिलहाल इन सभी प्रक्रियाओं से पूर्व कौन-कौन से कलाकार भारत की धरती पर तमाम लालचों के साथ आये और कुछ तो फायदों के साथ वापस लौटे तो कुछ को निराशा ही हाथ लगी। रॉयल एकादमी में शुरुआत के कुछ समय बाद ही सदस्य के रूप में जोहान ज़ोफ़नी को भी जोड़ा गया। 13 मार्च 1733 में फ्रैंकफर्ट में जन्में जोहान अधिकतर अभिनेता एवं अभिनेत्रियों के ही चित्र बनाया करते थे, नाटकीय चित्रों के लिए भी वो खूब प्रसिद्ध थे। उनके अधिकतर कृतियों में बातचीत करती हुई आकृतियां ही नजर आती थीं। 'ट्रिब्यूना ऑफ द उफ़ीजी' उनकी महत्वपूर्ण कृति है।

1783 से लगभग पांच वर्षों तक ज़ोफ़नी भारत में ही रहे जहां गवर्नर जनरल और नवाबों के चित्र बनाए। ऐतिहासिक चित्रों का भी निर्माण उन्होंने किया जबकि लंदन में ही जन्मे चित्रकार टिली केटल ने भी भारत में काफी चित्र बनाए। 1768 में भारत के मद्रास में आकर लगभग दो साल वहीं रहते हुए लोगों के चित्र बनाए। इन सभी के चित्रों में शैलीगत परंपराएं विद्यमान हैं और वही घिसे-पिटे विद्यालयी सिद्धांतों के आधार पर ये सभी आगे बढ़ते रहे हालांकि गौर करने वाली बात तो ये है कि इन सभी के यहां आने से भारतीय कला एवं कलाकारों पर कोई विशेष प्रभाव तो नहीं पड़ा पर यात्रा इन सभी ने लगातार की है। टिली केटल बाद में कलकत्ता आ गये और वहां भी चित्रों का निर्माण ही करते रहे। विलियम होजेस के यात्रा की चर्चा भी है जो 1778 में भारत की यात्रा पर आए। कलाकार थामस डैनियल के बनाए चित्र अधिक मात्रा में देखने को मिलते हैं अपने भतीजे विलियम डेनियल के साथ मिलकर थॉमस ने भारत में खूब यात्राएं की और खूब चित्र बनाए कुछ चित्रों के साथ तो दोनों के नाम साथ में ही आते हैं। इंग्लैंड में जन्मे एवं रॉयल एकेडमी ऑफ आर्ट्स से प्रशिक्षित हुए थॉमस भी सभी की तरह धन और प्रसिद्धि के लालच में ही भारत की ओर रुख किये थे। थॉमस के बनाए चित्र बड़े ही शांत और स्थिर नजर आते हैं। उन्होंने ओल्ड कोर्ट हाउस कलकत्ता, शिवाला घाट बनारस, ताजमहल जैसे प्रसिद्ध स्थलों के दृश्य चित्र बनाए जिनमें बड़ी ही बारीकता से काम किया गया है। विलियम भी इसी यात्रा में शामिल थे फलतः विषय लगभग समान ही है हां इनके कुछ कृतियों में रंग का हल्का सा पुट दिखाई पड़ता है जो थॉमस के यहां कम ही नजर आता है।

कलाकारों में सृजन और स्वतंत्रता को लेकर उधेड़बुन की स्थिति हमेशा बनी रहती है। कुछ हवा के साथ चलना पसंद करते हैं तो कुछ उसके विरुद्ध अपना नया और संघर्षशील मार्ग बनाते हैं। उन्नीसवीं सदी के अंत से विद्रोह की भावना वैश्विक स्तर पर स्पष्टतः दिखने लगती है तथा उसके परिणामस्वरूप अच्छे-बुरे दौर भी दिखने लगे थे। अस्वीकृत कलाकारों की प्रर्दशनी एक उदाहरण बन चुकी थी। हर तरफ संघर्ष के नये रास्ते खुल रहे थे कला में बहुत कुछ नया हो रहा था जबकि भारतीय कला शिक्षा में अंधानुकरण जारी था। यहाँ कला विद्यालय रॉयल

अकादमी के ही नक्शेकदम पर चल रहे थे। परतंत्रता के बेड़ियों में जकड़े होने की वजह से अस्तित्व खो चुकी भारतीय कला पर विदेशी तकनीक थोप कर एक अलग ही तरह का माहौल तैयार किया जा रहा था। हालांकि छात्रों को कला में कुछ करने के लिए कला के आधार भूमि की जरूरत तो थी ही इससे बचा नहीं जा सकता था पर अपने आधार और अस्तित्व को भूल जाने के शर्त पर ये सही नहीं था। बची-खुची कला से भारतीयता नदारद थी।

किसी से उम्मीद लगाना भी बेमानी ही था पर जल्द ही बदलाव की बयार बही, अंग्रेजी प्रशासक, कलाकार, कला समीक्षक तथा कला परिवार से संबंधित अर्नेस्ट बिनफिल्ड हैवेल जो 1884 से ही मद्रास स्कूल ऑफ आर्ट में अपनी सेवा दे रहे थे और कला में हो रहे अंधानुकरण से दुखी भी थे, कुछ बदलाव भी चाहते थे पर अकेले संभव नहीं हो पा रहा था। हैवेल का तबादला 1896 में कलकत्ता के कला विद्यालय में हो गया। हैवेल बदलाव के बयार में प्रमुख साबित हुए।

16 अगस्त 1854 में निजी विद्यालय के रूप में कलकत्ता में जिस कला विद्यालय की शुरुआत हुई, जिसके स्थान को कई बार बदला गया। जहाँ पर अभी- अभी हैवेल प्राचार्य बनकर आये थे, का योगदान आगे चलकर भारतीय कला में काफी सराहनीय हो गया। हैवेल की मुलाकात अबनींद्र नाथ टैगोर से हुई। आगे चलकर इस जोड़ी ने पूरे कला परिदृश्य को ही बदल कर रख दिया, सोई हुई कला भावना को जगा कर रख दिया लेकिन यहाँ तक पहुंचने के पूर्व के घटनाओं पर भी दृष्टिपात जरूरी है। 1864 में विद्यालय सरकार के अधीन हो गया। समय-समय पर विद्यालय प्रमुख भी बदलते रहे पर हैवेल के पूर्व, कार्य कम ही दिखता है। ई. बी. हैवेल ने भारतीय कला को ज्यादा स्वतंत्रता प्रदान की। छात्र जो अब तक अकादमिक बंधनों में बंधे हुए थे स्वतंत्र महसूस करने लगे पर चुनौती और बढ़ गई? हैवेल भारतीय कला एवं थाती के बहुत बड़े समर्थकों में थे। भारतीय कला शिक्षा को नये तरीके से परिभाषित करने हेतु हैवेल ने लगातार काम किया। काम संघर्षों वाला था एक तरफ जहाँ अंग्रेज अधिकारी भारतीयों एवं उनके संस्कृतियों पर कुठाराघात करते हुए अपना वर्चस्व कायम करने पर लगे हुए थे। पाश्चात्य को भारतीय संस्कृति पर भारी सिद्ध करने में लगे हुए थे। शासन तो था ही कला एवं संस्कृति पर भी शासन के फिराक में थे बल्कि काफी हद तक कामयाब भी। पर इन सभी से इतर हैवेल भारतीय कलाकारों को भारतीयता से परिचित करवाने के प्रयास में लगातार काम करते रहे। अजंता जैसी थाती पर गर्व करना सिखलाते रहे और उससे बहुत कुछ सीखने हेतु कला छात्रों को प्रेरित कर रहे। जिसका असर अंग्रेज अधिकारियों पर क्या रहा होगा अनुमान लगाया जा सकता है जबकि इधर भारतीय उनपर अपनी तकनीकी हम सभी को न सिखाने का लांछन भी लगा रहे थे। अच्छाई पर भी संदेह का ग्रहण लगा हुआ था। हैवेल को दोनों तरफ से विरोध झेलना पड़ रहा था पर मार्ग भी बनाना था फलतः इन सभी बातों से वो निराश नहीं हुए। हैवेल भारतीय संस्कृति को बहुत ही महत्वपूर्ण एवं महान मानते थे। उनका मानना था कि भारतीय कला के आगे पाश्चात्य कला कहीं भी नहीं ठहरती। हैवेल लगातार कला छात्रों के संशय युक्त मन में अपने कला के प्रति आत्मविश्वास जगाते रहे।

भारतीय कला पर वो लगातार अध्ययन करते रहे फलस्वरूप कई पुस्तकें उन्होंने भारतीय कला एवं उसके परिप्रेक्ष्य पर लिखी। लंदन से प्रकाशित द स्टूडियो पत्रिका में प्रकाशित उनके लेख में भारतीय कला पर गहनता से अध्ययन दिखाई देता है। भारतीय कला को पुनर्परिभाषित तथा पुनर्जिवित करने हेतु अबनींद्र के साथ ने धीरे धीरे ही सही उन्हें मजबूत बनाया।

व्यंग्य

बेताल का मोहब्बतिया मार्केट

रामविलास जांगिड़
लेखक व्यंग्यकार हैं।

बेताल अचानक पेड़ से कूदकर विक्रम के कंधे पर जा बैठा और बोला, 'हे विक्रम! आज मैं तुम्हें चुनावी रणनीति के गूढ़ रहस्यों का ज्ञान देने आया हूँ। यह कोई साधारण ज्ञान नहीं है। इसमें 'मोहब्बत की दुकान' से लेकर 'सौ टका का गारंटी' तक सब कुछ शामिल है!'

विक्रम ने तिरछी नज़र से बेताल को देखा और मन में सोचा, 'अब ये फिर से क्या नई बकवास लेकर आया है!' बेताल ने शुरू किया, 'देखो विक्रम! चुनाव एक कला है। जो इस कला को ना समझे उसके लिए भारी बला है। इसमें मात्र कुर्सी बाज का ही भला है। इस कला में 'जुमलों का मार्ट' सजाना बहुत जरूरी है। सबसे पहले 'मोहब्बत के मार्केट' का कांसेप्ट समझो। चुनाव में मोहब्बत का मार्केट वही खोलता है, जो जनता के दिलों में वोट खेंचू बनना चाहता है। नेता मंच पर जाकर ऐसे मुस्कुराते हैं, जैसे हर एक वोटर उनकी प्रेमिका हो। बड़े-बड़े वादे ऐसे करते हैं, मानो वोट के साथ-साथ दिल भी जीतना है। 'मोहब्बत के मार्केट' की चमक से जनता का ध्यान खींचो। इस मार्केट में मुफ्त वादों की क्रीम रखो और मीठी-मीठी बातों का परफ्यूम लगाओ।÷पर बेताल, यह जुमलों का बाजार और सौ टका का गारंटी क्या चीज है?' विक्रम बोल उठा।

बेताल ने एक शरारती मुस्कान के साथ कहा, 'अरे मूर्ख विक्रम, यही तो असली मजा है। देखो, चुनावी माहौल में 'जुमलों का बाजार' सजाना बहुत जरूरी है। जनता को यह दिखाओ कि हमारे पास हर मर्ज की दवा है, बल्कि दवा पहले से ही है और मर्ज बाद में पैदा हो जाएगा। कोई महंगाई से परेशान है तो उसके लिए 'दाम घटाने' का जुमला उछालो, कोई बेरोजगारी से त्रस्त है तो 'हर घर नौकरी' का जुमला फेंको। ऐसा लगे कि हम तो हर समस्या का हल देकर ही आए हैं। मंच से बड़ी-बड़ी बातें करो, और ऐसे वादे करो जो दिखने में जितने बड़े हैं, हकीकत में उतने ही हल्के। जैसे ही जनता को लगे कि तुम्हारे पास हर सवाल का जवाब है, समझ लो आधी बाजी तो वही जीत गए।' विक्रम ने हैरानी से पूछा, 'और 'सौ टका का गारंटी'? ये क्या है?' बेताल ने ठहाका मारते हुए कहा, 'अरे! 'सौ टका का गारंटी' का मतलब है कि हर जुमले और हर वादे के साथ सौ प्रतिशत विश्वास दिलाओ कि जो कह रहे हो, वही होगा। जनता तो गारंटी शब्द सुनते ही झूम उठती है। इस बात का ख्याल रखना कि वे इस गारंटी पर भरोसा करें, चाहे फिर तुम इस गारंटी को पूरा करो या न करो। बस मंच पर ऐसे बोलो, जैसे तुम्हारे बिना जनता का कोई अस्तित्व ही नहीं है। कहो, 'ये काम हो जाएगा, सौ टका का गारंटी!' ताकि जनता सोचे कि तुम तो भगवान के अवतार हो!'

विक्रम की आंखें चमक उठीं और उसने हंसते हुए कहा, 'बेताल, अब समझ आया कि चुनाव में असल मुद्दा क्या होता है। असल मुद्दा है कि जनता को सपना दिखाना और उसे विश्वास दिलाना कि वही सपना सच्चाई है!' हर बार 'मोहब्बत की दुकान' का दरवाजा खोलो, 'काटेंगे तो मारेंगे' की बातें फेंको, 'जुमलों का बाजार' सजाओ, और 'सौ टका का गारंटी' का मुहर लगाकर जनता को अपने पक्ष में कर लो। यही है चुनाव जीतने का असली मंत्र। कहकर बेताल पेड़ के उल्टा लटक कर चीखने लग गया।

सुबह सवेरे मीडिया एल. एल. पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पी. जी. इंफ्रास्ट्रक्चर एण्ड सर्विसेस प्रा.लि., राउखेड़ी, देवासरोड, इंदौर से मुद्रित एवं 662, साईंकृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक-उमेश त्रिवेदी
संपादक(म.प्र.)-गिरीश उपाध्याय
वरिष्ठ संपादक-अजय बोकिल
स्थानीय संपादक-हेमंत पाल
प्रबंध संपादक-अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNINo.MPHIN/2015/66040,
MobileNo.:09893032101
Email-subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

दीपोत्सव

प्रकाश पर्व दीपावली का शास्त्र संदर्भ

डॉ. तेज प्रकाश पूर्णानन्द व्यास
(लेखक प्रकृति एवं वन्य जीव के अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक तथा पूर्व प्राचार्य शा.राजा भोज स्नातकोत्तर महाविद्यालय, धार हैं)

दीपावली - प्रकाश, खुशी और आंतरिक खुशी साझा करने का त्योहार, राष्ट्र के प्रहरी दीपावली की रात्रि को भी विषम परिस्थिति में राष्ट्र की रक्षा करते हैं। हम बेफिक्र होकर दीपावली मनाते हैं। आइए दोनों पक्ष का अवगाहन करते हैंः सियाचिन जैसे कठोर और अत्यंत शीतल क्षेत्र में भारतीय सैनिक हमारी सुरक्षा और देश की अखंडता बनाए रखने के लिए कठोर परिश्रम और अदम्य साहस का परिचय देते हैं। यह स्थान विश्व का सबसे ऊँचाई पर स्थित युद्धक्षेत्र है, जहाँ पर साल के अधिकतर समय तापमान -40 डिग्री सेल्सियस से भी नीचे रहता है। दीपावली पर, जब हम अपने घरों में अपने परिवार के साथ मिलकर पटाखे चलाते हैं और दीप जलाते हैं, तब सैनिक अपनी चौकी पर अलर्ट रहकर हमारे देश की सीमाओं की सुरक्षा करते हैं। वे वहाँ पर 'दीपावली' मना सकते हैं तो केवल किसी साथी के साथ, छोटे दीप जलाकर या एक-दूसरे को मिठाई बाँटकर। भारतीय सेना का यह बलिदान और साहस हमें हर त्योहार पर स्मरण करना चाहिए।

दिवाली, जिसे दीपावली के नाम से भी जाना जाता है, भारत में सबसे पसंदीदा त्योहारों में से एक है, जिसे बेहद उत्साह और खुशी के साथ मनाया जाता है। वैदिक परंपराओं में निहित, दिवाली न केवल तेल के दीपक (दीये) जलाने के बारे में है, बल्कि हमारे दिलों को रोशन करने, नकारात्मकता को दूर करने और दूसरों में खुशी फैलाने के बारे में भी है। हिंदू धर्मग्रंथों के अनुसार, दीपावली आत्म-चिंतन, कृतज्ञता और समुदाय के साथ आंतरिक खुशी साझा करने का समय है, जो शास्त्र सम्मत (शास्त्रीय रूप से समर्थित प्रथाओं) के सिद्धांतों के अनुरूप है।

दिवाली पांच दिनों तक चलती है, प्रत्येक दिन का विशेष महत्व हैः

1. **धनतेरस**- पहला दिन, भगवान धन्वंतरि को समर्पित, स्वास्थ्य और समृद्धि का जश्न मनाया जाता है। लोग सोना, चांदी या बर्तन खरीदते हैं, जो धन और कल्याण का प्रतीक है।
2. **नरक चतुर्दशी**- यह दिन राक्षस नरकासुर पर भगवान कृष्ण की विजय का प्रतीक है, जो आंतरिक अशुद्धियों को दूर करने और अहंकार और अज्ञान के विनाश का प्रतिनिधित्व करता है।
3. **लक्ष्मी पूजा (मुख्य दिवाली दिवस)**- लोग आशीर्वाद के लिए धन और समृद्धि की देवी देवी लक्ष्मी की पूजा करते हैं। घरों को दीयों से रोशन किया जाता है, जो ज्ञान की रोशनी का प्रतीक है, और परिवार जश्न मनाने के लिए एक साथ आते हैं।
4. **गोवर्धन पूजा**- यह दिन भगवान कृष्ण द्वारा ग्रामीणों को बारिश से बचाने के लिए गोवर्धन पर्वत उठाने की याद में मनाया जाता है। यह हमें प्रकृति की रक्षा और पोषण करना सिखाता है।
5. **भाई दूज**- भाइयों और बहनों के बीच बंधन का जश्न मनाते हुए, यह दिन परिवारों के भीतर प्यार, सुरक्षा और एकता पर जोर देता है।

दीपावली केवल भौतिक उत्सव का त्यौहार नहीं है; यह दूसरों के जीवन में आंतरिक प्रकाश लाने, खुशी साझा करने और परिवार, दोस्तों और समाज के साथ संबंधों की पुष्टि करने के बारे में है।

दिवाली का सार दान (दान) और भक्ति (भक्ति) में निहित है, जो मात्र अनुष्ठानों से परे है। धर्मग्रंथ व्यक्तियों को करुणा और उदारता के कार्यों में संलग्न होने, अपने आंतरिक आनंद और संसाधनों को जरूरतमंद लोगों के साथ साझा करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। खुशियाँ बाँटना धर्म का कार्य है, एक नेक कार्य है जो शांति और सद्भावना का वातावरण विकसित करने में मदद करता है। दीये जलाने का मतलब समर्थन, सहानुभूति और दयालुता बढ़ाकर दूसरों के जीवन को रोशन करना भी है।

दीपावली मनाने के फायदे

1. **मानसिक कल्याण**- दीपाव ली की परंपराओं में शामिल होने से अपनेपन और खुशी की भावना बढ़ती है। मानसिक कल्याण बढ़ता है। खुशी के हार्मोंस बढ़ते हैं, जैसे एंडोर्फिन ,जो मानव को श्रेष्ठ स्वास्थ्य प्रदान करते हैं।
2. **आध्यात्मिक विकास**- दीपावली अनुष्ठान आत्मनिरीक्षण और आत्म-शुद्धि को बढ़ावा देते हैं, जो आध्यात्मिक विकास के लिए आवश्यक हैं। शास्त्र सम्मत दीपावली के हिस्से के रूप में जप, ध्यान और निस्वार्थ कार्यों को प्रोत्साहित करता है, जिससे आंतरिक शांति मिलती है।
3. **एकता और बंधन** – त्यौहार पारिवारिक और सामाजिक बंधन को मजबूत करता है। जैसे-जैसे लोग एक साथ आते हैं, यह समुदायों के मध्य प्रेम, एकता और सद्भाव को बढ़ावा देता है।
4. **पर्यावरण जागरूकता**- गोवर्धन पूजा जैसी परंपराएं प्रकृति के साथ हमारे संबंधों पर जोर देती हैं। दिवाली हमें उत्सवों के लिए पर्यावरण-अनुकूल विकल्पों का उपयोग करने की भी याद दिलाती है, जिससे पर्यावरणीय श्रेष्ठता सृजन में सहायक हैं।
5. **समृद्धि फैलाना**- दीपावली के दौरान देने और दान करने का कार्य क्रम, लोगों के उत्थान, सामाजिक समानता को बढ़ावा देने और समुदायों के भीतर असमानताओं को कम करने में मदद करता है।

शास्त्र संदर्भ 1. **रामायण**- 14 वर्ष के वनवास के बाद भगवान राम की अयोध्या वापसी का जश्न दीपावली के दिन मनाया जाता है। अयोध्या के लोगों ने राम के स्वागत में दीये जलाए, जो प्रकाश और आनंद के प्रसार का प्रतीक था (वाल्मीकि रामायण, अयोध्या कांड)।

2. **भगवद गीता**- दीपावली वैराग्य और निस्वार्थ कर्म की शिक्षाओं को बढ़ावा देती है, जैसा कि भगवान कृष्ण ने भगवद गीता (अध्याय 2, श्लोक 47) में दर्शाया है, जहां किसी को पुरस्कार की उम्मीद किए बिना भक्ति के साथ कार्य करना चाहिए।
3. **स्कंद पुराण**- स्कंद पुराण जैसे ग्रंथ सच्ची समृद्धि प्राप्त करने के लिए दिवाली के दौरान आशीर्वाद साझा करने के महत्व पर प्रकाश डालते हैं।
4. **पद्म पुराण**- यह पुराण दीपावली के दौरान दान (दान) पर जोर देता है, हृदय को शुद्ध करने और समाज के उत्थान के लिए जरूरतमंद लोगों को भोजन, कपड़े और संसाधन देने को अभिवृद्ध करता है।
5. **अथर्ववेद**- वैदिक ग्रंथ एक आध्यात्मिक कार्य के रूप में दीपक जलाने का समर्थन करते हैं, जो ज्ञान के प्रसार और अज्ञानता को दूर करने का प्रतीक है, जो दिवाली का सार है।
6. **महाभारत**- यह त्योहार 13 साल के निर्वासन के बाद पांडवों की वापसी से जुड़ा है, जो लचीलेपन, धार्मिकता और पुनर्मिलन की खुशी का प्रतीक है, जो लोगों से कठिनाई पर जीत का जश्न मनाने का आग्रह करता है।
7. **ऋग्वेद**- प्रकाश और अच्छाई की अवधारणा (ऋग्वेद, मंडल 10) सद्गुणों के उत्सव पर जोर देती है, जो दीपावली के केंद्र में है।

कविता

कागज़ पर लिख लो

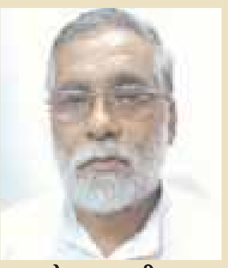

कमलेश कुमार दीवान

जुक-बुक में भरते हुए कविताएं दो चार
सूनी रह गई पत्रिका साहित्य के
अखबार!
साहित्य के अखबार पटल सब अपने
अपने
छाप रहे बस खास खास कुछ एक के
सपने!

दोहे चौपाई छंद गीत और सोरठे लिख
पाएं
सीखों एक उपाय सुनो गुनों फिर
समझाएं!

कहता है 'दीवान' कलम कागज़ पर
लिख लो
आई है एआई लिख रहे जुक-बुक में
दिख लो!

पुस्तक समीक्षा

कलेक्टर साहिबा 2- प्रेम और महत्वाकांक्षाओं की उलझन

नृपेन्द्र अभिषेक नृप
समीक्षक

कैलाश मांजू बिश्नोई की पुस्तक 'कलेक्टर साहिबा 2' अपने पहले भाग की अपार सफलता के बाद पाठकों के समक्ष आई है। जहाँ 'कलेक्टर साहिबा' का पहला भाग एंजल और गिरीश के प्रेम के चरमोत्कर्ष को प्रस्तुत करता है, वहीं दूसरा भाग न केवल उनके रिश्तों में आई पेचीदगियों का गहरा चित्रण करता है बल्कि सामाजिक मुद्दों को भी छूता है। इस उपन्यास में करियर, प्रेम, और आत्म-सम्मान के बीच की खींचतान को बड़े ही प्रभावशाली ढंग से दिखाया गया है, जो पाठकों को रिश्तों की जटिलताओं और महत्वाकांक्षाओं के टकराव पर गहराई से विचार करने पर मजबूर करता है।

पुस्तक की कहानी आईएएस अधिकारी एंजल और उसके सच्चे प्रेमी गिरीश के इर्द-गिर्द घूमती है। जहाँ पहले भाग में दोनों का प्रेम परवान चढ़ता है, वहीं दूसरे भाग में एंजल की महत्वाकांक्षाएं और गिरीश की भावनाएं आपस में टकराती हैं। एंजल का आईएएस बनना उसकी ज़िन्दगी को बदल देता है, लेकिन इसके साथ ही वह करियर और प्रेम के बीच उलझ जाती है। गिरीश, जो उसे दिल से चाहता है, आत्म-सम्मान और भावनाओं के द्वंद्व में फंसता है।

'कलेक्टर साहिबा 2' का मुख्य केंद्र बिंदु है, प्रेम और करियर के बीच संतुलन बिठाने की कठिनाई। लेखक ने एंजल के संघर्ष को बखूबी उकेरा है, जब वह अपनी महत्वाकांक्षाओं की ओर बढ़ती है, लेकिन अपने सच्चे प्रेमी गिरीश को भूल नहीं पाती। एंजल का गिरीश को धोखा देकर बड़े राजनीतिक घराने से सगाई करना, फिर बाद में उसे छोड़कर लौटना, दर्शाता है कि कैसे करियर और सामाजिक प्रतिष्ठा कभी-कभी व्यक्तिगत रिश्तों को प्रभावित करती है।

यह कहानी पाठकों के सामने यह सवाल खड़ा करती है कि क्या प्यार और करियर एक साथ निभाए जा सकते हैं, या फिर किसी एक की बलि चढ़ानी ही पड़ती है? इस मुद्दे को एंजल और गिरीश के माध्यम से खूबसूरती से बयां किया गया

है, जहाँ गिरीश की स्थिति ऐसी है कि वह अपने आत्म-सम्मान और एंजल के प्रति अपने प्रेम के बीच फंसा हुआ है।

लेखक ने एंजल के किरदार के माध्यम से उस मानसिकता को दिखाया है, जहाँ महत्वाकांक्षाएं और सामाजिक प्रतिष्ठा रिश्तों को पीछे धकेल देती हैं। जब एंजल राजनीतिक घराने से सगाई करती है और अंत में एक अमीर बिजनेसमैन दिव्य प्रकाश से शादी कर लेती है, तो यह समाज में प्रचलित 'गोल्ड डिगर' प्रवृत्ति की ओर भी इशारा करता है। प्रेम और धोखे का यह मिश्रण पाठकों को हर मोड़ पर उलझन में डालता है और उन्हें सोचने पर मजबूर करता है कि क्या सच्चे प्यार का आज की महत्वाकांक्षी दुनिया में कोई स्थान है?

'कलेक्टर साहिबा 2' केवल एक प्रेम कहानी नहीं है, बल्कि यह कई महत्वपूर्ण सामाजिक मुद्दों को भी उठाती है। लेखक ने बाल विवाह और युवाओं में बढ़ती नशे की लत जैसे संवेदनशील मुद्दों को प्रमुखता से प्रस्तुत किया है। डॉ. कृति भारती के माध्यम से बाल विवाह पर सशक्त संदेश दिया गया है, जो पाठकों को इस गंभीर समस्या के प्रति जागरूक करता है। वहीं, गिरीश के किरदार द्वारा लेखक ने युवाओं में नशे की बढ़ती प्रवृत्ति पर चिंता व्यक्त की है। यह उपन्यास समाज के इन पहलुओं की ओर ध्यान आकर्षित करने में सफल रहता है, जो आज भी हमारे समाज में प्रासंगिक हैं।

लेखक ने उपन्यास के माध्यम से किस्मत और जीवन के बारे में भी गहरे विचार प्रस्तुत किए हैं। उन्होंने यह दिखाने की कोशिश की है कि किस्मत के बारे में किसी को कुछ पता नहीं होता, और जो जीवन में असफल हो जाते हैं, उनके लिए 'किस्मत' शब्द शायद तसल्ली देने के लिए ही बनाया गया है। यह विचार पाठकों को अपने जीवन में किस्मत की भूमिका पर विचार करने के लिए प्रेरित करता है और उन्हें सोचने पर मजबूर करता है कि क्या सच में सब कुछ किस्मत पर निर्भर करता है, या फिर यह हमारे अपने प्रयास और फैसले हैं जो जीवन की दिशा तय करते हैं।

कैलाश मांजू बिश्नोई की लेखनी सरल और प्रभावी है, जो पाठकों को कहानी के साथ बांधे रखने में सफल होती है। उनकी शैली ऐसी है जो न केवल भावनाओं को गहराई से बयां करती है, बल्कि सामाजिक मुद्दों को भी स्पष्टता के साथ प्रस्तुत करती है। संवादों में गहराई और संवेदनशीलता है, जो पात्रों के बीच के रिश्तों को और अधिक वास्तविक बनाते हैं।

'कलेक्टर साहिबा 2' एक ऐसा उपन्यास है जो प्रेम, करियर, आत्म-सम्मान और सामाजिक मुद्दों को बारीकी से बुनता है। यह उपन्यास न केवल एंजल और गिरीश के रिश्तों की उलझन को दिखाता है, बल्कि पाठकों को यह सोचने पर भी मजबूर करता है कि जीवन में क्या ज्यादा महत्वपूर्ण है- प्रेम या महत्वाकांक्षाएं? लेखक ने भावनाओं की जटिलताओं और सामाजिक मुद्दों को जिस तरह से प्रस्तुत किया है, वह पुस्तक को अत्यधिक प्रभावी बनाता है। यदि आप एक ऐसी कहानी पढ़ना चाहते हैं जो रिश्तों की गहराई और सामाजिक मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करे, तो 'कलेक्टर साहिबा 2' आपके लिए एक अनिवार्य पढ़ाई है।

पुस्तक-कलेक्टर साहिबा 2
उपन्यासकार – कैलाश मांजू बिश्नोई
प्रकाशन- मंजुल पब्लिशिंग हाउस
मूल्य- 299 रुपये

भाई-बहन के संबंधों की मजबूती का पर्व भाई दूज

पर्व विशेष

योगेश कुमार गोयल

लेखक स्तंभकार हैं।

आमतौर पर दीपावली के दो दिन बाद अर्थात् कार्तिक शुक्ल द्वितीया को मनाए जाने वाले भाई दूज पर्व को 'यम द्वितीया' व 'भ्रातृ द्वितीया' के नाम से भी जाना जाता है। हालांकि इस वर्ष दीवाली 31 अक्टूबर को मनाई गई है और भाई दूज पर्व 3 नवंबर को मनाया जा रहा है। पंचांग के अनुसार कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि 2 नवंबर को रात 8 बजकर 21 मिनट पर शुरू होकर 3 नवंबर को रात 10 बजकर 5 मिनट पर रहेगी। इसलिए भाई दूज का पर्व 3 नवंबर को ही मनाया जाएगा। भाई दूज पर तिलक का शुभ मुहूर्त दोपहर 1 बजकर 10 मिनट से दोपहर 3 बजकर 21 मिनट तक है। बहुत से भाई इस दिन सौभाग्य तथा आयुष की प्राप्ति के लिए इस दिन यमुना अथवा अन्य पवित्र नदियों में साथ-साथ स्नान भी करते हैं। भैया दूज मनाने के संबंध में कई किवंदतियां प्रचलित हैं। एक कथा यमराज और उनकी बहन यमुना देवी से संबंधित है। भगवान सूर्यदेव की पत्नी छाया की कोख से यमराज और यमुना का जन्म हुआ था।

यमुना अपने भाई यमराज से बहुत स्नेह करती थी और अक्सर उनसे अनुरोध करती रहती थी कि वे अपने इष्ट मित्रों सहित उसके घर भोजन के लिए पधारें लेकिन यमराज हर बार उसके निमंत्रण को किसी न किसी बहाने से टाल जाते। कार्तिक शुक्ल द्वितीया को यमुना ने यमराज को एक बार फिर भोजन के लिए आमंत्रित किया। उस समय यमराज ने विचार किया कि मैं तो अपने कर्त्तव्य से बंधा सदैव प्राणियों के प्राण ही हरता हूं, इसलिए इस चराचर जगत में कोई भी मुझे अपने घर नहीं बुलाना चाहता लेकिन बहन यमुना तो मुझे बार-बार अपने घर आमंत्रित कर रही है, इसलिए अब तो उसका निमंत्रण स्वीकार करना ही चाहिए।

यमराज को अपने घर आया देख यमुना की खुशी का ठिकाना न रहा। उसने भाई का खूब आदर-सत्कार करते हुए उनके समक्ष नाना प्रकार के व्यंजन परोसे। बहन के आतिथ्य से यमराज बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने उसे कोई वर मांगने को कहा। इस पर यमुना ने उनसे अनुरोध किया कि आप प्रतिवर्ष इसी दिन मेरे घर आकर भोजन करें और मेरी तरह जो भी बहन इस दिन अपने भाई का आदर-सत्कार करे, उसे तुम्हारा भय न रहे। यमराज ने बहन यमुना को उसका इच्छित वरदान दे दिया। ऐसी मान्यता है कि उसी दिन से 'भाई दूज' का पर्व मनाया जाने लगा। भाई दूज के संबंध में और भी कई कथाएं प्रचलित हैं। ऐसी ही एक अन्य कथा के अनुसार, एक ब्राह्मण की दो ही संतानें थी-एक पुत्र एवं एक पुत्री। पुत्री बहुत समझदार एवं गुणवती थी। वह अपने भाई से जी जान से प्यार करती थी। एक दिन उसका भाई उससे मिलने उसकी ससुराल पहुंचा। उस समय वह सूत कातने में व्यस्त थी। अतः उसे भाई के आने का पता ही न चल सका। भाई भी बिना कुछ बोले चुपचाप एक ओर बैठा रहा। जब थोड़ी देर बाद बहन की नजर उस पर पड़ी तो भाई को अपने घर आया देख उसे बेहद खुशी हुई। उसने भाई का भरपूर आदर-सत्कार किया। अगले दिन भाई को वापस लौटना था, अतः रास्ते के लिए वह आटे के पकवान बनाने के उद्देश्य से चक्की में आटा पीसने लगी। अनजाने में चक्की में बैठा सांप भी आटे के साथ पिस गया। उसी आटे के पकवान एक पोटली में बांधकर उसने भाई को विदा किया और उसके घर से जाने के बाद जब उसे यह मालूम हुआ कि आटे में सांप पिस गया है तो अपने पुत्र को पालने में ही सोता छोड़कर वह अपने भाई के प्राणों की रक्षा के लिए दौड़ी। कुछ दूर जाने पर उसे एक पेड़ की छांव में अपना भाई सोता दिखाई दिया। उसने अभी तक पोटली में से कुछ भी नहीं खाया था। उसने भगवान का शुक्रिया अदा किया और पोटली उठाकर दूर फैंक दी तथा भाई के साथ मायके की ओर चल दी। रास्ते में उसने देखा कि भारी-भारी शिलाएं आकाश में उड़ रही हैं। उसने एक राहगीर से इस रहस्य के बारे में जानना चाहा तो उसने बताया कि जो बहन अपने भाई पर कभी नाराज न होती हो और उसे दिलो-जान से चाहती हो, उस भाई की शादी के समय ये शिलाएं उसकी छाती पर रखी जाएंगी। थोड़ी दूर चलने पर उसे नाग-नागिन दिखाई दिए। नाग ने बताया कि ये शिलाएं जिस व्यक्ति की छाती पर रखी जाएंगी, हम उसे डस लेंगे। जब बहन ने इस विपत्ति से बचने का उपाय पूछा तो नाग-नागिन ने बताया कि अगर भाई के विवाह के समय उसके सभी कार्य बहन स्वयं करे, तभी भाई की जान बच सकती है। जब उसके भाई के विवाह के लग्न का शुभ मुहूर्त आया तो वह भाई को पीछे धकेलती हुई स्वयं ही लग्न चढ़वाने के लिए आगे हो गई और घोड़ी पर भी स्वयं चढ़ गई। परिवारजन और संबंधी उसके इस विचित्र व्यवहार से हैरान तथा क्रोधित थे। उसके घोड़ी पर चढ़ते ही शिलाएं उड़ती-उड़ती आई लेकिन घोड़ी पर किसी पुरूष की जगह एक महिला को बैठी देख वापस मुड़ गई। जब सुहागरात का समय आया तो वह भाई को पीछे कर खुद भाभी के साथ सोने उसके कमरे में चली गई। परिवार के सभी सदस्य तथा सभी रिश्तेदार उसके इस अजीबोगरीब व्यवहार से बेहद आश्चर्यचकित और खफा थे। उन्हें उस पर गुस्सा तो बहुत आ रहा था लेकिन उसके जिद के समक्ष सभी विवश थे। सुहागरात पर नियत समय पर नाग-नागिन उसके भाई को डसने कमरे में पहुंच गए लेकिन उसने नाग-नागिन को मारने की सारी तैयारी पहले ही कर रखी थी। आखिरकार उसने नाग-नागिन का काम तमाम कर ही दिया और उसके बाद वह निश्चिंत होकर सो गई।

सुबह होने पर सभी मेहमानों को विदा करने के बाद परिवार वालों ने सोचा कि अब इस बला को भी कुछ बचा-खुचा देकर यहां से चलता कर दिया जाए लेकिन नींद से जागने पर जब उसने पूरी घटना के बारे में सब को विस्तार से बताया कि किस प्रकार वह अपने बच्चे को पालने में ही सोता छोड़कर दौड़ी-दौड़ी भाई के प्राण बचाने के लिए उसके पीछे चली आई और सभी को नाग-नागिन के मृत शरीर दिखाए तो सभी की आंखों में आंसू आ गए और भाई के प्रति उसका असीम प्यार तथा समर्पण भाव देखकर उसके प्रति सभी का हृदय श्रद्धा से भर गया।

भाई-भाभी तथा माता-पिता ने उसे ढ़ेर सारे उपहारों से लादकर बड़े मान-सम्मान के साथ खुशी-खुशी ससुराल विदा किया। भाई-बहन के बीच इसी प्रकार के पावन संबंध, प्रेमभाव तथा उनके दिलों में आपसी संबंधों को मजबूत बनाने के लिए ही 'भाई दूज' पर्व मनाया जाता है।

आम आदमी का मन जब कुबेर हो जाता है

त्यौहार

डॉ.मुरलीधर चाँदनीवाला

अन्न के श्रृंगार से सजी हुई धरती जब नवरंग के हिंडोले में झूलने लगती है, अमावस को एक तरफ ठेलती हुई दीपक की नन्ही सी लौ तमस और जड़ता को पराजित कर अपनी मुस्कान बिखेर देती है, दुःख और दरिद्रता की छाती पर चढ़कर जब महालक्ष्मी का आकर्षण जन-जीवन को उत्सव के रंग में रंग देता है, आम आदमी का मन जब कुबेर हो जाता है, तब आता है दिवाली का त्यौहार।

हमारी मिट्टी कभी कृतघ्न नहीं हुई। वह जितनी बार भी रौंदी गई, उतनी ही बार पूरी जिद से उठ खड़ी हुई। स्नेह की बाती को सबसे पहले उसीने हिवड़े में जगह दी, उसे सिर हिलाते हुए आकाश को चूम लेने की इच्छा-शक्ति दी। मिट्टी का छोटा सा दीया यही कहानी दोहराता हुआ आ खड़ा होता है बार-बार। वह निवेदित होना जानती है उसके प्रति, जिसने उसे बनाया और प्राणों से सींचा। मिट्टी का जलता हुआ दीया भगवान् के प्रति कृतज्ञता का दीया है। वह इजहार है संतोष का, आत्मविश्वास का। मिट्टी का दीया हमारी वह जिजीविषा भी है, जो सतत बनी रहना चाहती है।

दिवाली के महापर्व पर गन्ने की पूजा केवल इसलिये नहीं, कि वह उगाई गई नई फसल है। वह जीवन के उस वंश की पूजा भी है, जो दुःख की पड़ी हुई गाँठों के बाद भी रस से भरा हुआ है। नवान्न की पूजा भी केवल इसलिये नहीं, कि वह बाज़ार में चमक भर देगा। नवान्न हमारी जीवन-शक्ति है, हमारी संजीवनी है। इसीलिये बड़े-बूढ़े कहते चले आये हैं कि जन्म के साथ जो कुछ हमें मिला, उसके लिये कृतज्ञ होने का महान् उत्सव है दिवाली। जाति-वर्ण, अमीर-गरीब, पढ़े-बिना पढ़े, साधु-असाधु, बच्चे-बूढ़े, सबके ऊपर दिवाली का उजास समान भाव से छा जाता है और संदेश देता है कि जो कृतज्ञ है, वही प्रकाशमान है और धनी है।

दिवाली हर साल आती है। कैसी भी विपत्ति हो या संकट के बादल छाये हों, निराशा के अंधकार को चीरती हुई दिवाली आती ही है और हमारे दुर्भाग्य को लपेट कर किसी अज्ञात गह्वर में फेंक देती है। फिर शुरू होता है जीवन का नया बहीखाता, फिर बुनने लगता है मीठे रिश्तों का स्वच्छ आकाश। उत्साह और उमंग की पाठशाला में फिर गूँजने लगती है सुख और समृद्धि की बारह खड़ी। मन के मंदिर में फिर सुनाई देने लगता है जीवन के उत्सव का नया मंगलाचरण।

प्रत्येक त्यौहार का अपना मनोविज्ञान होता है। दिवाली का भी अपना मनोविज्ञान है। दिवाली धनतेरस के साथ आती है। सबका धन अलग-अलग है। कोई सोने-चाँदी को धन मानता है, कोई कलम-दवात को। कोई सुख-भोग के संसाधनों को धन मानता है, कोई मन की शान्ति को। लेकिन धनतेरस कहती है-'पहला सुख निरोगी काया'। महाकवि कालिदास भी कहते हैं-'शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्।' धर्म का सबसे प्रमुख साधन तो शरीर ही है । इसलिये सबसे पहले अपने शरीर को साधने की सलाह दी जाती है। शरीर असाधारण सत्ता है, जहाँ मन और प्राण गति करते हैं। लक्ष्मी स्वस्थ देह में और स्वच्छ गेह में ही निवास करती है। धनतेरस अपने परिवेश में स्वास्थ्य की चेतना को जगाने का दिन है। स्वास्थ्य ही तो धन है। इसी पर तो रूप की प्रतिष्ठा है।

रूप चौदस रूपान्तरण के आह्वान का त्यौहार है। किसका रूपान्तरण? हमारे तन-मन का, हमारी चेतना का, हमारे घर-परिवार का, हमारे राष्ट्र का और राष्ट्र के धर्म का। इतने बड़े अनुष्ठान के लिये कितना बड़ा दिन सौगात में दे गये हमारे पूर्वज? और हम अपने चेहरों पर केवल उबटन ही मलते रह गये। प्रत्येक मनुष्य के रूप की अपनी लक्ष्मी है, उसका अपना वैभव है। जब तक वह लक्ष्मी नहीं जागेगी, तब तक मन के आँगन में प्रेम का दीया कौन संजोयेगा? प्रेम का उजास कहाँ होगा? मन का आकाश सितारों से जगमग न हो, तो समझ लो, दिवाली आई और मुँह फेर कर चली भी गई।

दिवाली की साँझ लक्ष्मी आती है घर के द्वार पर। लोग किवाड़ खुला छोड़ देते हैं। वह अकेली नहीं आती, हमारी इच्छाओं के उत्सव-पुरुष गणेश और विवेक की जाग्रत देवी सरस्वती भी साथ-साथ आते हैं। ध्यान रहे, गणेश जी और सरस्वती का साथ छोड़कर लक्ष्मी को रहना भी पसंद नहीं। गणेश जी हमारी मनोकामनाएँ पूरी करने में देर नहीं लगाते, लेकिन सरस्वती न हो, तो बुद्धि मोह के अंधेरे में चली जाती है और अकेली लक्ष्मी का साथ अहंकार से लाद देता है हमें। गणेश जी के साथ एक चूहा है। वह आपकी इच्छाओं को कुतर डालेगा, यदि आपका विवेक जाग्रत नहीं। सरस्वती के पास वह वीणा है, जो अपनी झंकार से जगाये रखती है हमें। पार्थिव सौन्दर्य के सुमंगल प्रतीक कमल पर खड़ी हुई लक्ष्मी जब अपना सम्पूर्ण वैभव लुटा ही रही हो, तो हममें अहं का नहीं, कृतज्ञता का ही भाव हो।

दिवाली का आगाज होते ही ऋतुएँ आपस में गले मिलने लगती हैं। आकाश से देव-जागरण के मुहूर्त झरने लगते हैं। निसर्ग की साधना का पीयूष सबमें बराबर-बराबर बँटने लगता है। वातायन इन्द्रधनुषी हो जाते और अन्नपूर्णाएँ मधु की गंध से सुवासित होने लगती हैं। मंगल वेलाएँ सुरम्य अल्पनाओं से सजने लगती हैं और हमारा चित्त प्रेम और शान्ति के जलाशय में अवगाहन के लिये उत्सुक होता है। सच मानिए, धरती नृत्य करने लगती है और आकाश से पारिजात के फूल बरसने लगते हैं।

इस बार दिवाली यह संदेश लेकर आ रही है कि पैसे के पीछे ही भागते रहोगे, तो पूरी शानो-शौकत में भी अकेले पड़ जाओगे। आह्वान करो प्रेम और सामंजस्य की लक्ष्मी का। आह्वान करो एकता और अखंडता की लक्ष्मी का। कहो कि हे महालक्ष्मी ! मनुष्यता दे, एक-दूसरे को सहन करने और साथ निभाने की शक्ति दे। ऐसा वर दे कि हम सब मिल-जुलकर शान्ति से रह सकें।आओ, हम फिर से नई आशा के सुर सजाएँ। जीवन के गान की मधुर धुन तैयार करें। अपनी साँसों को नई लय दें। शुभकामनाओं की फुलझड़ियों के बीच जब आत्मविश्वास का अनार फूटेगा,तब इन्द्रधनुषी रंगों की बहारें गुनगुनायेंगी- 'मंगलघट ढलके, ज्योति-कलश छलके।'

अंधेरे के विरुद्ध मानवीय उजास का पर्व

दीपावली

विवेक कुमार मिश्र

लेखक हिंदी के प्रोफेसर हैं।

करोड़ों करोड़ों मन में जब आकांक्षाओं के दीप जलते हैं तो माटी के दीये का प्रकाश आसमान से भी ऊंचा उठाने लगता है । धरती पर जो दीपमालाओं की राशि प्रकाश बिखेर रही है वह हर तरह के अंधेरे को दूर करने का साहस और संकल्प रखती है। यह पर्व शक्ति का , संकल्प का , साहस का और मनुष्य की आकांक्षाओं का महापर्व है जिसमें अंधेरे के विरुद्ध मानवीय उजास को खिलते हुए देखते हैं।

दीपावली जीवन मंगल और शुभता का पर्व है जिसमें हम स्वयं के लिए तो दीया जलाकर प्रकाश करते ही करते हैं, साथ ही अन्य के लिए दीया जलाते हैं, इस अन्य में आसपास के वे सारे लोग होते हैं जिनके माध्यम से हमारा पड़ोस बनता है। यह खुशी का पर्व एक दूसरे को खुश देखते हुए खुश रहने का है। इस पर्व पर हम सब घर आंगन और छत ही नहीं अपने आसपास के पूरे परिसर को जगमग करने के लिए आगे बढ़ते हैं । हर घर पर घर की स्त्रियां दीया जलाकर रखती जाती हैं और इस क्रम में एक शुभ ज्योति एक मंगल आभा आप से आप दिखनी शुरू हो जाती है। जिनके घर पर कोई दीया जलाने वाला नहीं होता उनके घर भी आज के दिन दीया जल जाता है। मंगल उजास हो जाता है और अंधियारा छंट जाता है। यह दीपावली लोगों की आशा व आकांक्षाओं की दीपावली होती है जिसमें लोगों अपने लिए परिवार के धन धान्य की समृद्धि की मांग महालक्ष्मी से करते हैं। यह पर्व अंधेरे के विरुद्ध मानवीय उजास का पर्व है। मनुष्यता बोध की सामूहिक शक्ति ही दीया जलाती है। माटी के दीये में इतनी ताकत होती है कि महा-अमवस्या की काली रात को जगमग जगमग कर देती है। मानों ऐसा लगता है कि आसमान से सारे तारे उतर कर धरती पर ही आ गये हों । यह कोई एक नहीं करता, यह सब सारे मनुष्यों की सामूहिक सामाजिक एकता का प्रतिफल है कि पूरा परिवेश ही दीपमालाओं के उजास में नहा लेता है। दीपपर्व का उजियारा इतना कुछ कहता है कि बस आप ध्यान से सुनें और चलें तो चारों तरफ़ उजास और खुशियां ही खुशियां दिखेंगी। दीपपर्व के साथ सबसे ज्यादा बच्चे, घर की महिलाएं खुश होती है और उत्साह के साथ प्रकाश वृत्त को देखती हैं तो बच्चे पटाखे फोड़ते हैं, फुलझड़ी छोड़ते हैं भाव यह कि हर तरह से खुश दिखते हैं और घर के जो बड़े बुजुर्ग होते हैं इस बैभव व परंपरा के प्रसार व पूण्य को देखकर खुश होते हैं। इस तरह से यह पर्व आंतरिक खुशी को दीपमालाओं के संग प्रकट करने का भी माध्यम बन जाता है।

दीपपर्व के साथ ही हम जहां अपने लिए प्रकाश का प्रसार करते हैं वहीं अपने लोगों के लिए तो करते ही करते हैं इतना ही नहीं घर के आसपास जो जीव जगत का पसारा होता है उन सबके साथ हम सब दीपावली मनाते हैं। इस पर्व के साथ हमारे जो पालतू पशु होते हैं उनकी भी दीपावली मनाई जाती है। कहते हैं कि एक दिन तो घूरे के भी दिन फिरते हैं तो आज के दिन घूरे पर भी दीया जलाया जाता है। जहां गाय बैल को बांधते थे उन सब जगहों पर आज के दिन जगमग प्रकाश की किरणें खेलती हैं। मनुष्य के साथ उसके पर्व में सब शामिल हो जाते हैं और यही सबसे उच्च भाव है। इस उच्च भाव के साथ हमारे संकल्प होते हैं जो दीपावली को दीपावली बनाते हैं -

एक दीपावली संकल्पों की शुभता का हो-यह तभी संभव होगा जब हम सब अपने भीतर पल रहे कलुष को न केवल पहचाने बल्कि उस कलुष को दूर करने के लिए अपना कर्म उद्योग करें। यह शुभता यह संकल्प तब फलित होता है जब हम सब अपने आसपास के कमजोर, दुखियारे व असहाय की आंखों में चमक लाने को , खुशी लाने का कर्म उद्योग कर सकें। दीपावली के दीप ज्योति पर्व का महत्व इस बात में है कि हम अपने घर को यदि प्रकाश वृत्त में ला रहे हैं तो यह हमारा दायित्व बनता है कि अपने आसपास भी अपनी शक्ति भर उजियारा फैला सकें।

एक दीपावली इस तरह से संकल्प भरी हो कि जो दीया हम जला रहे हैं वह हमारी संकल्पनाओं का प्रतीक हों। यह जो दीपक है वह जो उजियारा लेकर आता है वह किसी खास के लिए नहीं बल्कि यहां उम्मीद का उजियारा सभी के लिए है।

एक दीपावली नई पीढ़ी की संभावनाओं को उजागर करने वाली हों - हम यह देख सकें कि जो दीप जल रहा है उसके जलने में - उसकी खुशियों में हमारी नई पीढ़ी को कितना महत्व मिल रहा है। नई पीढ़ी किस तरह से प्रकाश का पर्व मना रही है ? दीपावली पर अपने शहर की संभावनाओं और बाजार को भी देखने का है कि बाजार की उम्मीद किस तरह चल रही है। बाजार किस तरह से खुशियों के पर्व दीपावली को मना रहा है । इसे जानते समझते हुए ही आप खुशियों के प्रतीक दीपावली को मनाने चलें। बाजार जीवन को अपने ढ़ंग से देखता है। वह इस समय अपनी चमक दमक में आपको लेकर चलता है कि इस तरह खुशियां मनायें। दीपपर्व के साथ मन की अनंत इच्छाएं और अपनी खुशियों में अन्य की खुशियों को संजोए हुए जब आप कदम बढ़ाते हैं तो यह खुशी केवल आप की नहीं रह जाती। यह खुशी सामाजिक हो जाती है और जीवन के शाश्वत सत्य को उम्मीद की रोशनी को लेकर जिंदा रहने वालों की आंखों की चमक को देखने की शक्ति देती है। इसी क्रम में हम सब स्वाभाविक रूप से दीपावली को मनाते हैं। यह दीपावली किसी एक की नहीं है। इस दीपावली में एक सामूहिक एकता का भाव, सद्भाव का भाव और एक ऐसा पवित्र संकप होता है कि उसे देखते समझते हुए जीवन का वृहद पाठ सीखते और सीखाते हैं।

शुभ दीपावली का पर्व हमें अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने का संकल्प का पर्व है । यह पर्व केवल उम्मीद का नाम लेने भर का नहीं है बल्कि यह पर्व दीप पर्व में दीपक जलाने के साथ प्रकाश वृत्त के प्रसार के साथ साथ इतना सामाजिक हो जाता है कि अपने आसपास की दुनियाओं में उजियारा फैलाने का कारक बन जाता है। यह पर्व मनुष्य की सामूहिक शक्ति का प्रकटीकरण दीपमालाओं के संग करता है। हमारे दीये में सबके लिए उजास की कामना होती है। जैसे-जैसे शाम का अंधियारा गहराता है वैसे-वैसे ही दीपमालाओं की सामूहिक एकता उजाले का ऐसा वृत्त बना देती है कि एक क्षण के लिए भी अंधेरे का टिक पाना संभव नहीं होता। इस प्रकाश पर्व को हम सब अपने बड़े बुजुर्गो के साथ मनाते हैं। अपनी आस्था के हर चरण पर जलते दीप रखते हुए आगे बढ़ते हैं तो वहीं अपनी संभावनाओं के प्रतीक खेत खलिहान और उद्योग व प्रतिष्ठान सभी जगह दीपमालाओं के जगमग उजास से उजाला ही नहीं बिखेरते बल्कि इस बात को स्वीकार करते हैं कि यदि मनुष्य सही में ठान लें कि हमें अंधेरे से दूर जाना है तो कोई ताकत नहीं है जो उसके उजाले की ओर उठे हुए भाव को रोक सकें। हम सब अपने अपने घर आंगन में दीया जलाते हुए अपने आसपास की खुशियों को बढ़ाने का कारक बने और सार्थक रूप से प्रकाश के इस पर्व को मनायें।

संवेदनशील विषय पर एक सशक्त पटकथा

वेब समीक्षा

आदित्य दुबे

(लेखक वेबसाइट ई-अंतर्भव में प्रबंध निदेशक है)

घरेलू हिंसा , भारतीय समाज की एक ज्वलंत समस्या है और इससे अनेक दाम्पती पीड़ित हैं और इससे उनका जीवन तो तहस-नहस हो ही रहा है साथ ही उनके बच्चों पर भी इसका दुष्प्रभाव देखने को मिल रहा है । पति-पत्नी के रिश्ते में जब प्रेम की जगह हिंसा ले ले, तो उससे पूरा परिवार और खासकर बच्चे तो प्रभावित होते ही हैं । कभी-कभी तो इससे पूरा परिवार बिखर जाता है । विडम्बना देखिए, हिंसा के इतने खतरनाक रूप को 'घरेलू' की संज्ञा दी जाती है, जिस कारण घर से बाहर के ज्यादातर लोग इसे पति-पत्नी के बीच का आपसी मामला कहकर दखल तक नहीं देते हैं । दो बहनों की बदले की कहानी के फार्मूले में चटखारेदार प्रसंग जोड़कर अभिनेत्री कृति सेनन और लेखिका कनिका ढिल्लों ने फिल्म - 'दो पत्ती' की बुनावट की है।

कहानी दो जुड़वा बहनों सौम्या और शैली की है , दोनों भूमिकाएं कृति सेनन ने निभाई है। दोनों बहनें, बहनें कम दुश्मन ज्यादा हैं। दोनों एक-दूसरे से बिल्कुल अलग हैं। सौम्या जहाँ अपने नाम की तरह शान्त, सौम्य और सहमी हुई रहती है, वहीं शैली बिंदास है। बचपन में अपनी माँ को खोने का दर्द नहीं सह पाने वाली सौम्या एंग्जाइटी अटैक से भी जूझती है। बीमारी की वजह से सौम्या का जो अतिरिक्त ध्यान रखा जाता है उसको शैली सहन नहीं कर पाती और उसे नीचा दिखाने का कोई मौका नहीं छोड़ती है। यहां तक कि जब सौम्या की जिंदगी में प्यार के रूप में ध्रुव (शहीर शेख) दस्तक देता है, तो उसे भी वो उससे छीन लेती है। मगर परिस्थिति कुछ ऐसी बदलती हैं कि ध्रुव, पत्नी के रूप में मॉडर्न शैली की बजाय घरेलू सौम्या को चुनता है। अब यह बात शैली सह नहीं पाती। इधर, शादी के बाद ध्रुव का एक अलग ही रंग सामने आता है। वह बात-बात पर सौम्या को पीटता है और सौम्या की बीमारी का रोना रोकर वापस शैली के करीब जाने लगता है।

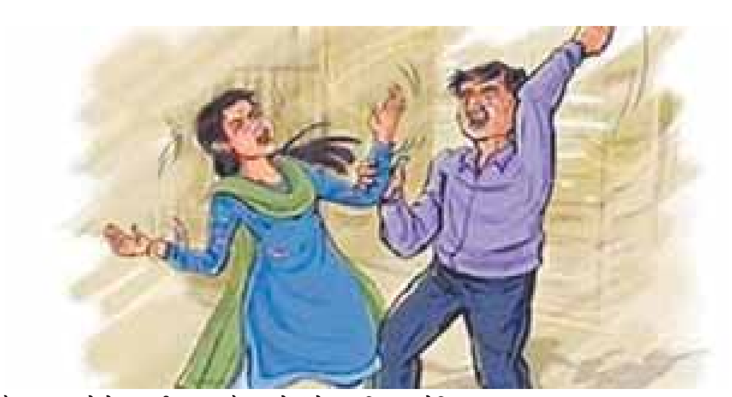

घरेलू हिंसा की इस कहानी की बुनावट पहाड़ी इलाके के एक छोटे-से कस्बे देवीपुर की पृष्ठभूमि में की गई है। घरेलू हिंसा के इस मामले में कानूनी दखल के रुप में इंस्पेक्टर विद्या ज्योति (काजोल) की इन्ट्री तब होती है जब विद्या को पति के पत्नी के साथ मारपीट की रिपोर्ट दर्ज करवाने के लिए एक फोन कॉल आता है। विद्या ज्योति कायदे कानून को दिल-ओ-जान से मानने वाली पुलिस वाली है। उसका सहकर्मी मना भी करता है कि ऐसे घरेलू हिंसा के मामले में कोई पत्नी अपने पति के खिलाफ नहीं बोलती है ऐसे में वहाँ जाने का कोई फायदा नहीं है, लेकिन उसूलों की पक्की विद्या ज्योति निकल पड़ती है अपने कर्तव्यपथ पर। यहाँ से शुरू होती है एक सनसनीखेज कहानी। कहानी में खूब ट्विस्ट और टर्न हैं , मगर सत्यमेव जयते के बोध वाक्य की तर्ज पर विद्या घरेलू हिंसा रोकने के मिशन में कामयाब होती है।

शशांक चतुर्वेदी के निर्देशन में बनी इस फिल्म की कहानी, पटकथा और संवाद कनिका ढिल्लों ने लिखे हैं। घरेलू हिंसा और मेंटल हेल्थ जैसे गूढ़ और संवेदनशील विषय होते हुए भी पटकथा रोचक है। अपने स्टाइल के मुताबिक, कनिका ने उसमें कई ट्विस्ट और टर्न डाले हैं। कहानी परत दर परत खुलती है। हालांकि, कुछ अहम राज पहले ही समझ में आ जाते हैं। फिल्म में कोर्टरूम ड्रामा भी है, जिसे और धारदार रचा जाना चाहिए था। कमजोर डिफेंस के कारण वह फीका रह गया है। साथ ही, ध्रुव और सौम्या के घरेलू हिंसा वाले ट्रैक (सौम्या का बच्चा करने की चाहत और ध्रुव का गुस्से में आपा खोना) पर आलिया भट्ट के बैनर की पहली फिल्म 'डार्लिंग्स' की छाप नज़र आती है। अभिनय की बात करें तो काजोल और कृति सेनन दोनों का काम अच्छा है। उनकी स्क्रीन प्रेजेंस बाँधे रखती है। शहीर शेख को अपनी डेब्यू फिल्म में दमदार भूमिका मिली है, उन्होंने अपने भूमिका को बखूबी निभाया है, लेकिन उनमें अभी भी कहीं-कहीं थोड़ी हिचक नजर आती है।

खूबसूरत वादियों में लगे सेट में मार्ट रातासेप की सिनेमेटोग्राफी लाजवाब है। सचेत-परम्परा के कंपोजिशन में 'शायद ये प्यार है...' अच्छा बन पड़ा है, जबकि 'रांझण' फिल्म शेरशाह के गाने 'रांझा' की नकल लगता है। फिर भी, संवेदनशील विषय वाली यह फिल्म देखी जा सकती है। फिल्म मर्डर मिस्ट्री तो नहीं है, लेकिन सस्पेंस थ्रिलर बनने की कोशिश करती है।

मरीजों की हालत स्थिर, दीपावली मनाने एकत्रित हुए थे सगे-संबंधी

परिवार के 7 सदस्य फूड पॉइजनिंग के शिकार, सभी ने खाये थे कढ़ी-बड़े

संजय द्विवेदी, बैतूल। दीपावली की रात भोजन करने के बाद एक ही परिवार के 7 लोग फूड पॉइजनिंग के शिकार हो गये, जिन्हें उपचार के लिए जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है। सभी की हालत स्थिर बनी हुई है। प्राप्त जानकारी के अनुसार खाना खाने के लगभग डेढ घंटे बाद सभी को उल्टियां होना शुरू हो गई। परिजन किराये का वाहन करके सभी मरीजों को सुबह 4 बजे जिला अस्पताल लेकर पहुंचे, जहां मरीजों का उपचार चल रहा है। बताया जा रहा है कि परिवार के जिन सदस्यों ने बडे और कडी खाई थी, केवल वहीं फुड पॉइजनिंग के शिकार हुए है। इससे संभावना लग रही है कि कढ़ी खाने से ही फूड पायजनिंग हुई है। दरअसल झल्लार थाना क्षेत्र में चूनालोहमा के पास ग्राम घाना में रामदास उईके के घर आदिवासी परपंरा के अनुसार दीपावली मनाने उनके ससुराल सहित अन्य गांव से रिश्तेदार आए थे। घर में लगभग 12-15 लोग थे। जिनके लिए घर में ही भोजन बना था। भोजन में कढी, बडे सहित अन्य पकवान बने थे। पूजन के बाद 11 बजे तक सभी लोगों ने भोजन किया। इनमें 7 लोगों ने कढ़ी खाई थी, बाकी लोगों ने कढ़ी नहीं खाई थी। जिन सात लोगों ने कढ़ी खाई थी उन्हें खाना खाने के लगभग डेढ़ घंटे बाद उल्टियां होने लगी। एक के बाद एक सात लोगों को उल्टियां होने से परिवार में हडकंप मच गया।

यह लोग हुए फूड पॉइजनिंग के शिकार

ग्राम घाना रायपुर में रामदास उईके के घर खाना में कडी-बडे खाने के बाद रामदास की पत्नी शकुन उईके (35), साला राजू धुर्वे पिता फगन धुर्वे (29), भतीजा राजवीर धुर्वे पिता राजेश धुर्वे (13), भांजी रजनी नवडे (17), साले का दोस्त चिंटू बावने पिता शिवकुमार बावमने (23), भांजा रितिक उईके पिता सुनील उईके (12), उसका पुत्र राज पिता रामदास उईके (13) को उल्टियां होने लगी। सभी का जिला अस्पताल में उपचार चल रहा है। रामदास उईके के साले राजू धुर्वे ने बताया एक के बाद एक सात लोगों को उल्टियां होने पर उन्होंने रात्रि लगभग 11.30 बजे एम्बुलेंस 108 को कॉल किया था। लेकिन 4 घंटे तक एम्बुलेंस नहीं पहुंची। मरीजों की हालत खराब होने पर गांव से ही किराए का वाहन कर सभी बीमार सुबह 4 बजे जिला अस्पताल पहुंचे, जहां उपचार के बाद सभी को आराम है।

युवक ने कीटनाशक पीया, इलाज के दौरान मौत

बैतूल। प्रभातपट्टन क्षेत्र के करसपानी के एक युवक ने अज्ञात कारणों से कीटनाशक पी लिया। जिसे उपचार के लिए जिला अस्पताल में भर्ती किया था। यहां उपचार के दौरान युवक ने दम तोड़ दिया। पुलिस मामले की जांच कर रही है। पुलिस सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार विजय पिता बलराम (35) ग्राम करसपानी थाना मुलताई ने बुधवार को घर में जहरीले पदार्थ का सेवन कर लिया था। जिस समय उसने जहर खाया, घर पर कोई नहीं था। जब परिजन घर पहुंचे तो बलराम उल्टियां कर रहा था। परिजनों ने युवक को गंभीर हालत में पहले पट्टन सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र लेकर पहुंचे, जहां पर प्राथमिक उपचार के बाद युवक को जिला अस्पताल बैतूल रेफर कर दिया। गुरुवार रात जिला अस्पताल में इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। मृतक के पिता बलराम ने बताया कि युवक खेती का काम करता था। उसकी शादी हो चुकी थी और युवक की दो बच्चियों भी हैं। 2 साल से विजय की मानसिक स्थिति कुछ ठीक नहीं थी। पोस्टमार्टम कर शव परिजनों को सौंप दिया गया है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

सहस्त्रबाहु जयंती में अतिथि होंगे केन्द्रीय मंत्री एवं विधायक

जिला स्तरीय जयंती सहस्त्रोत्सव के रूप में मनाएगा कलार समाज

बैतूल। श्री हैहय क्षत्रिय कलचुरी कलार समाज जिला बैतूल द्वारा समाज के आराध्य भगवान राजराजेश्वर सहस्त्र अर्जुन की जयंती आगामी 8 नवम्बर को सहस्त्रोत्सव के रूप में मनाई जाएगी।

जिला स्तरीय समारोह में मुख्य अतिथि केन्द्रीय राज्य मंत्री एवं स्थानीय सांसद दुर्गादास (डीडी) उईके रहेगे, वहीं विशिष्ट अतिथियों के रूप में बैतल विधायक हेमंत खंडेलवाल, आमला विधायक डॉ. योगेश पंडाग्रे, घोड़ाडोंगरी विधायक श्रीमती गंगा सज्जनसिंह उईके, मुलताई विधायक चन्द्रशेखर देशमुख, भैंसदेही विधायक महेन्द्र सिंह चौहान जिला पंचायत

अध्यक्ष राजा पंवार मौजूद रहेगे। हैहय क्षत्रिय कलचुरी समाज द्वारा आगामी 8 नवम्बर को कनक वॉटर पार्क खेड़ी में जिला स्तरीय समारोह सहस्त्रोत्सव मनाया जाएगा। समाज के जिला अध्यक्ष मनोज आर्य ने बताया 8 नवम्बर को जिले भर के सामाजिक बंधु सुबह 10 बजे तक जिला मुख्यालय पर छविगृह कांतिशिवा में एकत्र होंगे, यहां से भव्य शोभायात्रा के साथ शहर के प्रमुख मार्गों से होते हुए कनक वाटर पार्क पहुंचेगे। जहां दोपहर 12 से समारोह प्रारंभ होगा। समाज के संरक्षक प्रेमशंकर मालवीय ने बताया समारोह के मुख्य अतिथि केन्द्रीय राज्य मंत्री दुर्गादास उईके होगे। पिछले दिनों समाज के जिला अध्यक्ष मनोज आर्य के नेतृत्व में समाज के प्रतिनिधि मंडल ने श्री उईके के अर्जुन वार्ड स्थित निवास पर पहुंचकर उन्हें समारोह के लिए आमंत्रित किया। श्री उईके ने समारोह में आने की स्वीकृति प्रदान की है।

प्रकृति वात्सल्य गौशाला धार में हुई गोवर्धन पूजा

धार। प्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री डा. मोहन यादव के आह्वान पर प्रकृति वात्सल्य गौशाला , धार में गरिमामयी कार्यक्रम में गोवर्धन पूजन का कार्यक्रम किया गया। प्रकृति वात्सल्य गौशाला जिले में एक मात्र ऐसी गौ शाला है जहां बीमार गायों की सेवा की जाती है।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जिला पंचायत सीईओ अभिषेक चौधरी ने कहा गोवर्धन पूजा में आकर अभिभूत हूँ यहां बीमार गायों की सेवा की जाती है। अन्य गौशाला में भी इसका अनुसरण कराया जाएगा । आर आई पुरषोत्तम विश्नोई ने कहा कि गौ माता की सेवा ईश्वर की सेवा है। थाना प्रभारी समीर पाटीदार ने कहा गो वंश की सेवा के लिए गौ शाला को जहां आवश्यकता होगी हम सदेव तैयार रहेंगे। इस अवसर पर जिला पंचायत सीईओ अभिषेक चौधरी ,समाजसेवी समंदर सिंह पटेल ,आर आई पुरूषोतम बिश्नोई, डिप्टी डायरेक्टर डा.मोदी, थाना प्रभारी समीर पाटीदार , प्रेस क्लब सचिव अशोक शास्त्री, पर्यावरणविद सचिन दवे, ब्राह्मण समाज जिला उपाध्यक्ष गोटू शुक्ला ब्राह्मण समाज जिला सचिव प्रवीण शर्मा, समाजसेविका प्रमिला शर्मा, उद्योगपति नवीन गर्ग, लालू यादव ,करुण जोशी, एडवोकेट अवध द्विवेदी, पद्युमन पाठक,सूर्या दुबे,विजय दवे विजय अग्रवाल उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन राजेश शर्मा ने किया। आभार प्रकृति वात्सल्य गो शाला के अध्यक्ष धर्मेंद जोशी ने किया। गौशाला के पदाधिकारियों ने अतिथियों को आशवस्त किया कि प्रकृति वात्सल्य गौशाला, धार जल्द ही प्रदेश की नंबर 1 गौशाला बनेगी।

जो माया से मोहित है वो कृष्ण तक नहीं पहुंच पाते : प्रणव दास प्रभु

नर्मदापुरम। एलआईसी दफ्तर के उपर द्वितीय तल स्थित इस्कॉन मंदिर परिवार में आज कृष्ण भक्तों ने गोवर्धन पूजा उत्सव उल्लास पूर्वक मनाया गया। भगवान कृष्ण की प्रसन्नता के लिए आज भी प्रतिदिन के भांति सुबह पांच बजे मंगल आरती प्रारंभ हुई। मंदिर परिवार के मुखिया प्रणव दास प्रभु के सानिध्य में हुई मंगल आरती के पश्चात भगवान नरसिंह देव आराधना और तुलसी आराधना के पश्चात उपस्थित सभी कृष्ण भक्त और वैष्णवों ने मंदिर में सामूहिक रूप से हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे कृष्ण, हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे महामंत्र जाप का जाप किया, सुबह सात बजे दर्शन आरती और गुरु पूजा के पश्चात सुबह कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। प्रात: ग्यारह बजे से पुन: मंदिर में आज गोवर्धन पूजा उत्सव के लिए भक्त एकत्रित हुए। मंदिर को आज गोवर्धन पूजा के लिए विशेष रूप से सजाया गया। भक्त हर्षित और मोहित सरकार ने गोबर से भगवान कृष्ण और गिरीराज पर्वत की आकृषित और मनमोहक आकृति उकेरी, सैकड़ों भक्तों ने भाग लेकर उच्च स्वर में महामंत्र का गान करते हुए मंदिर में गोवर्धन पूजा उत्सव मनाया गया। इस दौरान विशेष रूप से गिरीराज जी को 56 भोग अर्पण किए गए गिरीराज की पूजा से पहले वृन्दावन चंद्र दास द्वारा गौ माता की विधि पूर्वक पहले धूप फिर दीप, फिर जल और वस्त्र से पूजा करने के पश्चात बाद में पुष्पों से गाय माता की पूजा की गई, गाय माता को गुड़ और स्वादिष्ट भोजन अर्पित किए।

जिलेभर में हर्षोल्लास से मनाया गया दीपावली पर्व, बस-ट्रेनों में रही भीड़

दीपों से जगमग हुआ घर-आंगन, हुई आतिशबाजी

बैतूल। धन-धान्य की देवी मां लक्ष्मी का पावन पर्व दीपावली जिले भर में हर्षोल्लास एवं आपसी सद्भावना के साथ मनाया गया। गुरूवार को दीपोत्सव पर सारा शहर दीपों की रोशनी से जगमग हो उठा। इस पर्व पर माता लक्ष्मी की पूजा कर रंगीन आतिशबाजी की गई। शहर में रंगीन आतिशबाजी का दौर देर रात तक चलता रहा। दीपावली के त्योहार को हर्षोल्लास से मनाने के लिए महिलाओं ने सुंदर-सुंदर आंगन में रांगोली उकेरी, जो देखते ही बन रही थी। आंगन में चारों ओर सजी रांगोली के बाद नये-नये वस्त्र धारण किये हुए परिवार के लोगों ने मां लक्ष्मी की विधि-विधान से पूजन-अर्चन किया और हमेशा आशीर्वाद बना रहे यहीं मनोकामना मांगी। परिवार के प्रत्येक सदस्यों द्वारा मां लक्ष्मी की पूजा अर्चना करने के बाद सभी घर के आंगन में आ गए और आतिशबाजी करते रहे। आतिशबाजी को लेकर खासकर बच्चों में काफी उत्साह नजर आया। घर के बड़े-बुजूर्ग छोटे-छोटे बच्चों को फुलझडियां जलाकर दे रहे थे और बच्चे आनंदित हो फुलझडियों का आनंद ऐसे उठा रहे थे। आलोक, हर्षित, निकिता ने बताया कि दीपावली पर उनके मम्मी-पापा ने उनके लिए ढेर सारे फटाखे लेकर आये थे जो उन्होंने रात तक फोड़े। इसी तरह रवि सागर ने भी बताया कि उनके मम्मी-पापा ने भी उनके लिए ढेर सारे फटाखे लेकर आये थे।

दीपों से जगमग हुए घर -दीपावली पर्व की तैयारियों में नागरिकों ने अपने-अपने बजट के अनुसार कोई कसर नहीं छोड़ी थी। नागरिकों ने अपने-अपने घरों के आकर्षक विद्युत साज-सज्जा करने के साथ-साथ घरों के सामने दीपक जला रखे थे। जिससे पूरा घर ही रोशनी से नहा रहा था। प्रत्येक नागरिकों द्वारा ऐसा ही करने से शहर में जहां भी नजर दौड़ाओ वहां रोशनी ही रोशनी दिखाई पड़ रही थी। आकर्षक विद्युत साज-सज्जा से सजे मकानों में गेंदे और आम के पत्तों की आकर्षक तोरण बांधी गई। घर के प्रत्येक दरवाजे पर आम के पत्तों की तोरण बंध जाने से मकान बेहद सुंदर दिखाई दे रहे थे। तोरण बांधने के लिए नागरिकों ने सुबह से आम के पत्तों को घर में लाना शुरू कर दिया था।

80-100 रूपए किलो बिके फूल-दीपावली पर सबसे अधिक उपयोग में आने वाले गेंदों के फूलों की कीमत आसमान छू रही थी। बावजूद इसके नागरिकों ने 80-100 रूपए किलो के भाव से ही सही, लेकिन फूल जरूर खरीदे और अपने-अपने मकानों एवं वाहनों पर माला बनाकर सजाए। बाजार में गेंदे के फूल विक्रेताओं ने बताया कि इस वर्ष गेंदे की फसल अच्छी होने के बावजूद भी फूलों के दामों में कोई कमी नहीं आई। बाजारों में सुबह से ही हर चौक-चौराहे पर गेंदे के फूल बेचने दुकानें लगी रही। दीपावली मनाने सभी परिजन एवं रिश्तेदारों दूर-दूर से घर पहुंचे। हंसी-ठिठोली के बीच बड़े-बुजूर्गो का आशीर्वाद प्राप्त कर सभी ने दीपावली पर्व का जमकर आनंद उठाया और खूब आतिशबाजी का मजा लिया।

देर रात तक जले पटाखे - दीपावली पर्व मनाने नागरिकों का उत्साह चरम पर दिखाई दिया। गत वर्षो की तुलना में इस वर्ष नागारिकों ने आतिशबाजियों का जमकर लुत्फ उठाया और देर रात तक फटाखे फोड़ते रहे। रंगीन आतिशबाजी से समूचा शहर रोशन हो गया था और एक से एक आतिशबाजियों का नजारा नागरिकों को देखने को मिला। लोगों ने बड़े उत्साह के साथ महंगे से महंगे पटाखे जलाए। बच्चे ने जमकर आतिशबाजी का आनंद उठाया। वहीं बधाई संदेश एक कोने से दूसरे और उसके बाद तीसरे व्यक्ति के पास पहुंचते रहे। लोगों ने मोबाइल, व्हाट्सएप, इंटाग्राम और सहित सोशल मीडिया के जरिए अपने परिचितों को बधाई संदेश भेजे। देर रात तक बधाईयां देने का क्रम चलते रहा।

एक माह तक मनेगी दीपावली- दीपावली के एक दिन बाद ग्रामीण अंचलों में मनाई जाने वाली गायकी दीपावली का शुभारंभ हो गया। ग्रामीण अंचलों में गायकी द्वारा गाय-बछिया को खूब खिलाया गया और पशु पालकों से ईनाम के रूप में गायकी ने नये-नये वस्त्र एवं उपहार लिए। ग्रामीण अंचलों में गायकी दीपावली से शुरू हुई दीपावली एक माह तक अलग-अलग गांव में मनाई जाएंगी। जिस भी गांव में दीपावली मनाई जाएंगी, वह अपने रिश्तेदारों को अपने घर आने के लिए आमंत्रित करेगे और स्वादिष्ट व्यंजन खिलाकर विदा करेंगे। खासकर आदिवासी अंचलों में एक माह तक दीपावली का पर्व चलते रहेगा।

बस और ट्रेनों में रही भीड़ - दीपावली पर्व मनाने के लिए नागरिक दूर-दूर से अपने-अपने माता-पिता, रिश्तेदारों के पास पहुंचे और विधिविधान के साथ मां लक्ष्मी का पूजन-अर्चन कर दीपावली का पर्व मनाया। एक साथ बड़ी संख्या में नागरिकों द्वारा अपने-अपने घर पहुंचने से यात्री बसों एवं ट्रेनों में यात्रियों का जनसैलाब उमड़ गया और ट्रेनों एवं बसों में पैर रखने की भी जगह नहीं मिली। सभी को अपने घर पहुंचने की जल्दी थी इसलिए खड़े-खड़े ही सफर करते दिखाई दिए। कुछ बसें दीपावली के चलते नहीं भी चली। इससे यात्रियों को और अधिक परेशान होना पड़ा, जो बसे चल रही थी, उनमें भी पैर रखने को जगह नहीं थी। भीड़ को देखते हुए कई लोगों ने अपने निजी साधन से ही यात्रा करना उचित समझा।

नेशनल बास्केटबॉल प्रतियोगिता के लिए अश्विनी का हुआ चयन

बैतूल। 68वीं राष्ट्रीय शालेय बास्केटबॉल प्रतियोगिता के लिए बैतूल के खिलाड़ी अश्विनी पिता रूबेन तिर्की का चयन नेशनल गेम्स के लिए हुआ है। बैतूल के प्रतिभाशाली खिलाड़ी अश्विनी अंडर 19 आयु वर्ग में आगामी 18 से 22 नवम्बर तक पटियाला (पंजाब) में आयोजित नेशनल प्रतियोगिता में अपने खेल का प्रदर्शन करेंगे। इस संबंध में जानकारी देते हुए वरिष्ठ बास्केटबॉल प्रशिक्षक राकेश बाजपेई ने बताया कि नेशनल गेम्स में भाग लेने वाले मध्यप्रदेश के खिलाडियों का शालेय दल का प्री-नेशनल कोचिंग कैंप 11 से 15 नवंबर तक सतना में आयोजित होगा। इसके बाद वहां से खिलाड़ी सीधे नेशनल गेम्स के लिए पटियाला जाएंगे। उल्लेखनीय है कि बैतूल के प्रसिद्ध सीबीएससी स्कूल सतपुड़ा वैली पब्लिक स्कूल के छात्र अश्विनी शुरू से ही प्रतिभावान खिलाड़ी रहे हैं। इन्होंने राजनांदगांव छत्तीसगढ़ में अंडर-12 में ऑल इंडिया प्रतियोगिता 3×3 भी जीती थी और इसके बाद अश्विनी ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए सतना में भी तृतीय स्थान प्राप्त किया था। इसके बाद राज्य स्टीरीय प्रतियोगिता में बेहतर प्रदर्शन करने के बाद अश्वनी तिर्की का चयन नेशनल गेम्स के लिए हुआ है। उनके चयन पर जिला बास्केटबॉल एसोसिएशन सहित सभी खिलाडियो और खेल प्रेमियों ने बैतूल के इस प्रतिभाशाली खिलाड़ी को बधाई देते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की है।

बैल सज्जा प्रतियोगिता का आयोजन, 5 बैल जोड़ी रही प्रथम

बैतूल/शाहपुर। शाहपुर से लगभग 4 किमी दूर ग्राम सिलपटी में गोवर्धन पूजा के दिन बैल सज्जा प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। ग्राम सिलपटी के मां खेड़ापति दरबार में गौठान, (गोवर्धन) पर्व पर आयोजित इस प्रतियोगिता में 26 बैल जोड़ियों ने हिस्सा लिया। प्रतियोगिता में 5 बैल जोड़ी को प्रथम पुस्कर प्रदान किये गये, जिसमें तन्मय चौरे, प्रताप उइके, राजेंद्र पूजारी, राधे चौरे, मनोहर चौरे शामिल है, वहीं द्वितीय पुरस्कार में 9 बैल जोड़ी और अन्य 12 बैल जोड़ी को सांत्वना पुरुस्कार दिया गया। ग्राम के गौ सेवक, गौ पालकों ने अपने-अपने सुंदर गोधन को स्नान कराकर, नए वस्त्र पहनाकर, उन्हें सुंदर रंगों से सजाकर, सींगों में सुंदर कलर करके, उनके सारे आभूषण पहनाकर, बेल सरकार प्रतियोगिता मैदान पर लेकर पहुंचे। गौ सेवकों ने बताया कि हमारा देश कृषि प्रधान देश है और हमें कृषि करने में आज भी गौधन की आवश्यकता होती है। कृषि में सबसे महत्वपूर्ण गौधन हर जगह से हर महत्वपूर्ण जगह काम में आते हैं।

गौपालन और गौउत्पाद सम्पूर्ण आरोग्य के लिए आवश्यक: केंद्रीय मंत्री

गौशालाओं में गौवर्धन पूजा एवं गौपूजन का कार्यक्रम आयोजित

बैतूल। गौवर्धन पूजा के अवसर पर जिले की समस्त गौशालाओं में गौवर्धन पूजा एवं गौपूजन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। मुख्य कार्यक्रम केन्द्रीय राज्य मंत्री जनजातीय कार्य दुर्गादास उइके एवं बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल की उपस्थिति में भारत भारती गौशाला में गोवर्धन पूजा एवं गौ पूजा के साथ आरंभ हुआ। तत्पश्चात् त्रिवेणी गौशाला में केंद्रीय राज्य मंत्री श्री उइके एवं विधायक बैतूल श्री खंडेलवाल द्वारा त्रिवेणी गौशाला झगडिया मे पुन: गोवर्धन पूजा, गौपूजन एवं गौ ग्रास के साथ आरंभ हुआ। जनसभा को संबोधित करते हुए केन्द्रीय राज्य मंत्री दुर्गादास उइके द्वारा गौपालन के महत्व को प्रतिपादित करते हुए बताया कि गौ पालन एवं गौ उत्पादो का उपयोग कर सपूंर्ण आरोग्य प्राप्त किया जा सकता है। हमारे पुराणों में भी गौ के महत्व को प्रमुखता से स्थान देते हुए उसे पूजनीय बताया गया है। उनके द्वारा पंचगत्य उत्पादों पर विस्तृत चर्चा करते हुए इसका महत्व प्रतिपादित किया। बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल ने अपने उद्बोधन में बताया कि गाय हमारे लिए धार्मिक महत्व रखती है। गौ पालन हमारी मानसिक समृद्धि भी लाती है। उन्होंने पशुपालकों से अपील की कि वृद्धावस्था एवं अशक्तता की स्थिति में भी गाय अत्यंत उपयोगी है। अत: इन्हें निराश्रित छोडने के स्थान पर उत्पादक पशुओं के साथ रखकर उचित पालन पोषण किया जाना चाहिए। इस अवसर पर गौसेवा में संलग्न समर्पित कार्यकर्ताओ को उनके उत्कृष्ट कार्य के लिए प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

एडवोकेट रजनीकांत मिश्रा की श्रद्धांजलि सभा कल

बैतूल। कांग्रेस सेवा दल के जिला अध्यक्ष एवं एडवोकेट अनुराग मिश्रा के पिता एडवोकेट रजनीकांत मिश्रा का निधन 18 अक्टूबर 2024 को हो गया था, स्व. मिश्रा को श्रद्धांजलि अर्पित करने हेतु कल 4 नवंबर 2024, सोमवार को केसर बाग, कॉलेज रोड, सिविल लाइन, बैतूल में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन रखा गया है। दोपहर 12 बजे से होने वाले इस कार्यक्रम में परिवार, मित्र और शुभचिंतक उन्हें श्रद्धांजलि देने के लिए एकत्रित होंगे।

भाजपा की सक्रिय सदस्य बनी विधायक गंगा उइके

जिलाध्यक्ष ने दिलाई विधायक को सदस्यता

बैतूल। भारतीय जनता पार्टी के संगठन एवं सक्रिय सदस्यता अभियान के तहत भाजपा जिलाध्यक्ष आदित्य बबला शुक्ला एवं पूर्व भाजपा जिलाध्यक्ष एवं संगठन सह चुनाव प्रभारी बसंत बाबा माकोड़े ने घोड़ाडोंगरी विधायक श्रीमती गंगा सज्जन सिंह उइके को विधिवत रूप से भाजपा की सक्रिय सदस्यता ग्रहण कराई। इस अवसर पर भाजपा मंडल अध्यक्ष बैतूल विक्रम वैद्य भी उपस्थित थे।

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का दीपावली मिलन समारोह संपन्न

बैतूल। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ बैतूल द्वारा दीपावली मिलन समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम माधव स्मृति कार्यालय में आयोजित हुआ। जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में स्वयं सेवक विभाग प्रचारक नरेन्द्र यादव, जिला प्रचारक शिवम ग्वाल, जिला सह संघ चालक खेमराज दादौर, नगर संघ चालक संजय गिरोडे एवं स्वयं सेवक संघ बैतूल के पदाधिकारी तथा कार्यकर्तागण मौजूद रहे।

भाई बहन के स्नेह का पर्व

भाई दूज...

कार्तिक शुक्ल द्वितीया को मनाया जाने वाला यह पर्व भाई बहन के स्नेह का अद्भुत प्रतीक पर्व है। दीपावली के पाँच दिवसीय महोत्सव में से यह एक अति महत्वपूर्ण पर्व है जिसे हम भाई दूज कहते हैं। भाई दूज को यम द्वितीया भी कहते हैं।

भाई दूज की पौराणिक कथानुसार सूर्यदेव की पत्नी छाया की कोख से यमराज तथा यमुना का जन्म हुआ। यमुना अपने भाई यमराज से स्नेहवश निरंतर निवेदन करती थी कि वे उसके घर आकर भोजन करें तथा

उसका आथित्य स्वीकार करे। लेकिन यमराज को व्यस्तता के चलते अवसर ही न मिल पाता। कार्तिक शुक्ल द्वितीया को यमुना अपने घर के द्वार पर अचानक यमराज को खड़ा देखकर भाव –विभोर और हर्षित हो गई। प्रसन्नचित्त हो भाई को विजय तिलक लगाया और यथा सामर्थ स्वागत–सत्कार किया तथा भोजन करवाया। इससे प्रसन्न होकर यमराज ने बहन से वर माँगने को कहा। तब बहन ने भाई से कहा कि आप प्रतिवर्ष इस दिन मेरे यहाँ भोजन करने आया करेंगे तथा इस दिन जो बहन अपने भाई को टीका करके भोजन खिलाए उसे आपका भय न रहे। यमराज ने प्रसन्न होकर यमुना को यह वरदान दिया कि इस दिन यदि भाई–बहन दोनों एक साथ यमुना नदी में स्नान करेंगे तो उनकी मुक्ति हो जाएगी और तथास्तु कहकर यमुना को अमुल्य वस्त्राभूषण देकर यमपुरी को चले गये। ऐसी भी मान्यता है की यम ने इस दिन अपने बहन के घर जाने से पूर्व सभी आत्माओं को मुक्त कर दिय था जिससे उन्हें यम की यातना से मुक्ति मिली इसी कारण इस दिन यमुना नदी में भाई–बहन के एक साथ स्नान करने का बड़ा महत्व है। इसके अलावा यमी ने अपने भाई से यह भी वचन लिया कि जिस प्रकार आज के दिन उसका भाई यम उसके घर आया है, हर भाई अपनी बहन के घर जाए। तभी से भाईदूज मनाने की प्रथा चली आ रही है। जिनकी बहनें दूर रहती हैं, वे भाई अपनी बहनों से मिलने भाईदूज पर अवश्य जाते हैं। मान्यता ऐसी भी है की जो भी भाई आज के दिन अपने बहन के हाथ का बना कुछ भी भोग ग्रहण करते है, उनके आतिथ्य को स्वीकार करते है, और अपनी बहन का आदर सत्कार, सम्मान से विदाई करते है उन्हें यमुना के भाई यम के कोप से मुक्ति मिल जाएगी।

हिंदू समाज में भाई–बहन के अमर प्रेम के दो ही त्योहार हैं। पहला है रक्षा बंधन जो श्रावण मास की पूर्णिमा को आता है तथा दूसरा है भाई दूज जो दीपावली के तीसरे दिन आता है। परम्परा है कि रक्षाबंधन वाले दिन भाई अपनी बहन को रक्षा का वचन देकर उपहार देता है और भाई दूज वाले दिन बहन अपने भाई को तिलक लगाकर, उपहार देकर उसकी लम्बी उम्र की कामना करती है। रक्षा बंधन वाले दिन भाई के घर तो, भाई दूज वाले दिन बहन के घर उसके हाथों से सप्रेम बना भोजन करना अति शुभ फलदाई होता है।यह पर्व भाई बहन के प्रेम का अनूठा पर्व है। इस पर्व पर भाई का बहन के घर जा कर उसके हटो बना कुछ भोग ग्रहण करना ही बड़ा शुभ माना गया है, उसके बाद बहन का भाई को उपहार देना और भाई का बहन को कुछ उपहार, अन्न, वस्त्र, धन देना सौभाग्य में वृद्धि करता है।

उत्तर भारत की परम्परा में हर पर्व मानाने का अपना अलग ही मिजाज़ और उत्साह दीखता है। चाहे वह पर्व कितना ही बड़ा से बड़ा हो या छोटा से छोटा। पूरी परम्परा और रीती रिवाज़ के साथ सारे नियम का पालन पूर्ण निष्ठा व भाव से किया जाता है। भाई दूज के दिन यहाँ गोधना कूटने का विधान है, जिसे कूटने समाज और परिवार के सभी औरते, महिलाये एक स्थान पर जुटती है और फिर गोधना में कुटा गया लावा भाई को खिलाती है और चना भाई को घोटना होता है फिर बहन भाई से यह वचन लेती है के हमेशा की तरह भाई उनकी रक्षा करेगा और आज के दिन उनके घर आना नहीं भूलेगा। भाई दूज के दिन हर बहन कुमकुम एवं अक्षत से अपने भाई का तिलक कर उसके उज्ज्वल भविष्य के लिए आशीष देती हैं। भाई अपनी बहन को अन्न – वस्त्र और यथाशक्ति कुछ उपहार या दक्षिणा देता है।

इसके अलावा कायस्थ समाज में इसी दिन अपने आराध्य देव चित्रगुप्त की पूजा की जाती है। कायस्थ लोग स्वर्ग में धर्मराज का लेखा–जोखा रखने वाले चित्रगुप्त का पूजन सामूहिक रूप से तस्वीरों, चित्रों अथवा मूर्तियों के माध्यम से करते हैं। वे इस दिन कारोबारी बहीखातों की पूजा भी करते हैं। आज के दिन कोई लिखा पढ़ी का कार्य नहीं किया जाता और सभी अध्यन – अध्यापन सामग्री को पूजा कक्ष में चित्रगुप्त जी के समक्ष रख दिया जाता है।

भाई–बहन के दिलों को जोड़े भाईदूज का पर्व

भाई और बहन का रिश्ता सच मुच सबसे जुदा और मजबूत माना गया है। भाई दूज और रक्षाबंधन जैसे पर्व इस बंधन को और भी ज्यादा मजबूत बना देते हैं। दिवाली के दूसरे दिन के बाद अधिकतर घरों में भाई दूज मनाने की परंपरा होती है। भाईदूज में हर बहन कुमकुम एवं अक्षत से अपने प्यारे भाई के माथे पर तिलक लगाती है और उसके उज्जवल भविष्य के लिये आशीर्वाद देती है। इसके बाद भाई अपनी बहन को पैसे या कोई उपहार देता है। क्या आप जानना चाहते हैं कि भारत में भाईदूज इतनी हंसी खुशी के साथ क्यूं मनाया जाता है? आइये जानते हैं इसका कारण – भाईदूज से जुड़ी कथा– भाईदूज को यम द्वितीया भी कहते हैं। कहते हैं कि इसी दिन यम देवता ने अपनी बहन यमी (यमुना) को दर्शन दिये थे, जो कि बहुत दिनों से उनसे मिलने के लिये परेशान थी। फिर यम उसके घर पर आए और यमी ने उनका खूब खुले दिल से स्वागत किया। फिर यम ने प्रसन्न होकर उसे वरदान दिया कि इस दिन यदि भाई–बहन दोनों एक साथ यमुना नदी में स्नान करेंगे तो उनकी मुक्ति हो जाएगी। एक दूसरी कथा में भगवान श्री कृष्ण ने दानव, नरकासुर का वध किया था। फिर वह अपनी बहन सुभद्रा के पास गए और उनकी बहन ने उनका तिलक कर के स्वागत किया। भाईदूज का महत्व हर भारतीय त्योहार की तरह भाईदूज का भी अपना अगल महत्व है। यह परिवार को पास लाने और भाई–बहन के प्यार को मजबूत करने का त्योहार है।

भाईदूज

एक पावन त्योहार

भाईदूज दिवाली के दो दिन बाद आने वाला ऐसा पर्व है, जो भाई के प्रति बहन के स्नेह को अभिव्यक्त करता है एवं बहनें अपने भाई की खुशहाली के लिए कामना करती हैं। भाईदूज में हर बहन कुंकूं एवं अक्षत से अपने भाई का तिलक कर उसके उज्ज्वल भविष्य के लिए आशीष देती हैं। भाई अपनी बहन को कुछ उपहार या दक्षिणा देता है। कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि को मनाए जाने वाले इस पावन पर्व को यम द्वितीया भी कहते हैं। इस त्योहार के पीछे एक किंवदंती यह है कि यम देवता ने अपनी बहन यमी (यमुना) को इसी दिन दर्शन दिया था, जो बहुत समय से उससे मिलने के लिए व्याकुल थी। अपने घर में भाई यम के आगमन पर यमुना ने प्रफुल्लित मन से उसकी आवभगत की। यम ने प्रसन्न होकर उसे वरदान दिया कि इस दिन यदि भाई–बहन दोनों एक साथ यमुना नदी में स्नान करेंगे तो उनकी मुक्ति हो जाएगी। इसी कारण इस दिन यमुना नदी में भाई–बहन के एक साथ स्नान करने का बड़ा महत्व है। इसके अलावा यमी ने अपने भाई से यह भी वचन लिया कि जिस प्रकार

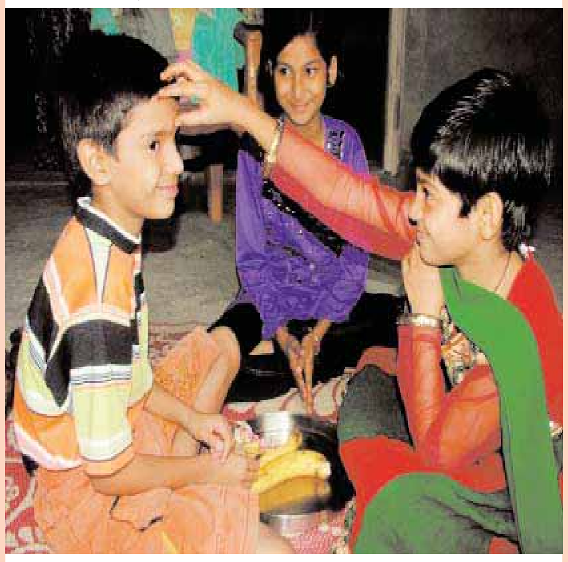

आज के दिन उसका भाई यम उसके घर आया है, हर भाई अपनी बहन के घर जाए। तभी से भाईदूज मनाने की प्रथा चली आ रही है। जिनकी बहनें दूर रहती हैं, वे भाई अपनी बहनों से मिलने भाईदूज पर अवश्य जाते हैं और उनसे टीका कराकर उपहार आदि देते हैं। इसके अलावा कायस्थ समाज में इसी दिन अपने आराध्य देव चित्रगुप्त की पूजा की जाती है। कायस्थ लोग स्वर्ग में धर्मराज का लेखा–जोखा रखने वाले चित्रगुप्त का पूजन सामूहिक रूप से तस्वीरों अथवा मूर्तियों के माध्यम से करते हैं। वे इस दिन कारोबारी बहीखातों की पूजा भी करते हैं। उत्तर भारत के कुछ क्षेत्रों में इसी दिन गोधन नामक पर्व मनाया जाता है जो भाईदूज की तरह होता है।

भाई–बहन के अटूट प्यार का प्रतीक भैयादूज

दीपोत्सव का समापन दिवस है कार्तिक शुक्ल द्वितीय, जिसे भैयादूज कहा जाता है। दीपावली महापर्व के अंतिम दिन का पर्व है 'भाईदूज', भाईदूज का त्योहार भाई बहन के प्रेम का प्रतीक है। भाई–बहन के प्रेम को बढ़ाने वाले इस पर्व के दिन बहनें अपने भाइयों को भोजन कराकर तिलक करती हैं और अपने भाई के कल्याण व दीर्घायु की प्रार्थना करती हैं। भाई भी बहनों को आशीष देकर भेंट देते हैं। दीवाली का त्योहार भाईदूज के बिना अधूरा है। हिंदी बहुल भाषी शहरों में इसे भाई दूज के नाम से ही जाना जाता है जबकि महाराष्ट्र में इसे भाव–भीज, बंगाल में भाई–फोटा और नेपाल में भाई–टीका के रूप में मनाया जाता है।

पौराणिक कथा के अनुसार यमराज इस दिन अपनी बहन यमुना के घर गए थे और उनकी बहन ने अपने भाई यमराज की पूजा करके उनके लिए मंगल आनन्द एवं समृद्धि के लिए कामना की। तभी से सारी बहनें इस दिन अपने भाइयों की रक्षा के लिए यह पूजा करती आई हैं। भाई दूज को यम द्वितीया के नाम से भी जाना जाता है। भाईदूज की एक पौराणिक कथा यह भी है कि इस दिन भगवान कृष्ण नरकासुर को मारने के बाद अपनी बहन सुभद्रा के पास गए थे। तब सुभद्रा ने अपने भाई कृष्ण का पारंपरिक रूप से स्वागत किया और उनकी पूजा आरती की। भाई दूज के लिए ऐसा भी प्रचलित है कि महावीर भगवान ने इसी दिन निर्वाण प्राप्त किया था जिससे उनके भाई राजा नंदीवर्धन महावीर को खोने से बहुत व्यथित हुए। तब उस दिन उनकी बहन सुदर्शना ने अपने भाई को काफी दिलासा दी और फिर उनकी सुख शांति के लिए हमेशा उनका साथ निभाया और उनकी रक्षा के लिए पूजा अर्चना की। तभी से सभी महिलाएं भैया दूज मनाकर भाई बहन के प्रेम का सम्मान करते आए हैं। पूजा विधान इस दिन बहनें अपने भाई की दीर्घायु की कामना के लिए व्रत रखती हैं। सुबह सुबह स्नान ध्यान करने के बाद पूजा की थाली सजाकर भाई का तिलक करती हैं और उन्हें बुरी नजरों से बचाने के लिए उनकी आरती उतारती हैं। बदले में भाई भी बहनों के इस अटूट प्यार को देखकर उन्हें उपहार देते हैं। इसी प्रकार जो भाई अपनी बहन के घर जाकर उसका आतिथ्य स्वीकार करे तथा उसे भेंट दें, उसकी सब अभिलाषाएं आप पूर्ण किया करें एवं उसे आपका भय न हो। यमुना की प्रार्थना को यमराज ने स्वीकार कर लिया। तभी से बहन–भाई का यह त्योहार मनाया जाने लगा। वस्तुतः इस त्योहार का मुख्य उद्देश्य है भाई–बहन के मध्य सौमनस्य और सद्भावना का पावन प्रवाह अनवरत प्रवाहित रखना तथा एक–दूसरे के प्रति निष्कपट प्रेम को प्रोत्साहित करना है।

भाई दूज पर क्या करें

भाई दूज के दिन ब्रह्ममुहूर्त (लगभग 5 बजे) में उठकर दैनिक कार्यों से निवृत्त होकर शरीर पर तेल मलकर स्नान करें। इस दिन भाई तेल मलकर गंगा–यमुना में स्नान करें। (यदि यह संभव न हो तो बहन के घर स्नान करें।) बहन निम्न मंत्र से भाई का अभिनंदन करें–

भ्रातस्तवानुजाताहं भुंक्ष्व भक्तमिमं शुभं।
प्रीतये यमराजस्य यमुनाया विशेषतः।।

बहन भाई को भोजन कराकर तिलक लगाए– इस दिन बहनों को चाहिए कि भोजन में भाइयों को चावल खिलाएं। भाई भोजन के बाद बहन के चरण स्पर्श कर उपहारस्वरूप वस्त्राभूषण आदि दें। इस दिन भाई को अपनी बहन के घर जाकर भोजन करना चाहिए। बहन सगी (अपने माता–पिता से उत्पन्न), ममेरी (मामा–मामी से उत्पन्न), चचेरी (चाचा–चाची से उत्पन्न), धर्म (रक्षाबंधन द्वारा बनाई गई) कोई भी हो सकती है। अपने भाई को शुभ आसन पर बैठाकर, हाथ–पैर धुलाकर, चावलयुक्त उत्तम पकवान, मिठाई आदि से अपनी सामर्थ्य अनुसार भोजन कराएं। भोजन पश्चात भाई को तिलक लगाकर उसके आयुष्य की कामना करें। भाई अपनी बहन को यथा सामर्थ्य सौभाग्य वस्तुएं (वस्त्र, आभूषण) व नकद द्रव्य देकर उसके सौभाग्य की कामना करें। बहन के पैर छूकर आशीर्वाद प्राप्त करे। इस दिन यमराज तथा यमुनाजी के पूजन का भी विधान है। भाई–बहन साथ–साथ यमुना अथवा अन्य पवित्र नदियों में स्नान कर आयुष्य एवं सौभाग्य की कामना करते हैं।

शास्त्रों के अनुसार भाईदूज का महत्व

शास्त्रों के अनुसार भैयादूज अथवा यम द्वितीया को मृत्यु के देवता यमराज का पूजन किया जाता है। इस दिन बहनें भाई को अपने घर आमंत्रित कर अथवा सायं उनके घर जाकर उन्हें तिलक करती हैं और भोजन कराती हैं। ब्रजमंडल में इस दिन बहनें भाई के साथ यमुना स्नान करती हैं, जिसका विशेष महत्व बताया गया है। भाई के कल्याण और वृद्धि की इच्छा से बहने इस दिन कुछ अन्य मांगलिक विधान भी करती हैं। यमुना तट पर भाई–बहन का समवेत भोजन कल्याणकारी माना जाता है। पौराणिक कथा के अनुसार इस दिन भगवान यमराज अपनी बहन यमुना से मिलने जाते हैं। उन्हीं का अनुकरण करते हुए भारतीय भ्रातृ परम्परा अपनी बहनों से मिलती है और उनका यथेष्ट सम्मान पूजनादि कर उनसे आशीर्वाद रूप तिलक प्राप्त कर कृतकृत्य होती हैं।

बहनों को इस दिन नित्य कृत्य से निवृत्त हो अपने भाई के दीर्घ जीवन, कल्याण एवं उत्कर्ष हेतु तथा स्वयं के सौभाग्य के लिए अक्षत (चावल) कुंकुमादि से अष्टदल कमल बनाकर इस व्रत का संकल्प कर मृत्यु के देवता यमराज की विधिपूर्वक पूजा करनी चाहिए। इसके पश्चात यमभगिनी यमुना, चित्रगुप्त और यमदूतों की पूजा करनी चाहिए। तदंतर भाई के तिलक लगाकर भोजन कराना चाहिए। इस विधि के संपन्न होने तक दोनों को व्रती रहना चाहिए।

दीपोत्सव का समापन दिवस है कार्तिक शुक्ल द्वितीय, जिसे भैयादूज कहा जाता है। इस पर्व के संबंध में पौराणिक कथा इस प्रकार मिलती है। सूर्य की संज्ञा से दो संतानें थीं– पुत्र यमराज तथा पुत्री यमुना। संज्ञा सूर्य का तेज सहन न कर पाने के कारण अपनी छायामूर्ति का निर्माण कर उसे ही अपने पुत्र–पुत्री को सौंपकर वहां से चली गई। छाया को यम और यमुना से किसी प्रकार का लगाव न था, किंतु यम और यमुना में बहुत प्रेम था। यमुना अपने भाई यमराज के यहां प्रायः जाती और उनके सुख–दुख की बातें पूछा करती। यमुना यमराज को अपने घर पर आने के लिए कहती, किंतु व्यस्तता तथा दायित्व बोझ के कारण वे उसके घर न जा पाते थे।

एक बार कार्तिक शुक्ल द्वितीय को यमराज अपनी बहन यमुना के घर अचानक जा पहुंचे। बहन यमुना ने अपने सहोदर भाई को बड़ा आदर–सत्कार किया। विविध व्यंजन बनाकर उन्हें भोजन कराया तथा भाल पर तिलक लगाया। यमराज अपनी बहन से बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने यमुना को विधिव भेंट समर्पित की। जब वे वहां से चलने लगे, तब उन्होंने यमुना से कोई भी मनोवांछित वर मांगने का अनुरोध किया।

यमुना ने उनके आग्रह को देखकर कहा– भैया! यदि आप मुझे वर देना ही चाहते हैं तो यही वर दीजिए कि आज के दिन प्रतिवर्ष आप मेरे यहां आया करेंगे और मेरा आतिथ्य स्वीकार किया करेंगे। इसी प्रकार जो भाई अपनी बहन के घर जाकर उसका आतिथ्य स्वीकार करे तथा उसे भेंट दें, उसकी सब अभिलाषाएं आप पूर्ण किया करें एवं उसे आपका भय न हो। यमुना की प्रार्थना को यमराज ने स्वीकार कर लिया। तभी से बहन–भाई का यह त्योहार मनाया जाने लगा। वस्तुतः इस त्योहार का मुख्य उद्देश्य है भाई–बहन के मध्य सौमनस्य और सद्भावना का पावन प्रवाह अनवरत प्रवाहित रखना तथा एक–दूसरे के प्रति निष्कपट प्रेम को प्रोत्साहित करना है। इस प्रकार दीपोत्सव–पर्व का धार्मिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय महत्व अनुपम है।

लथपथ...लथपथ... (पुलिस) शपथ...!

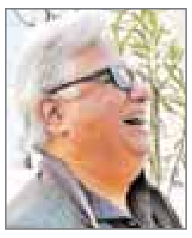

प्रकाश पुरोहित

‘सर, हमारे अन्नदाताओं को इस बार भी थाने में शपथ दिलवानी है। आप चीफ-गेस्ट रहेंगे।’ नए-नकोर पुलिस अधिकारी को सहायक ने बताया।

‘अन्नदाता, यानी नेताओं को, उद्योगपतियों को या शराब के ठेकेदारों को या सभी को... और इससे होगा क्या, क्या ये लोग नियमित बंदी नहीं देते हैं, जो शपथ दिलवाई जाए?’ रंगरूट अफसर ने आश्चर्य से पूछा।

‘नहीं सर, ये सभी तो बेहद ईमानदारी से योगदान करते हैं, इनके सामने तो हमें शपथ लेना पड़ती है कि कितना ही दबाव आ जाए, हम अनदेखी करते रहे हैं, करते रहेंगे। देखिए, दीवाली पर बड़े-बड़े शोरूम वालों ने फुटपाथ तक घेर लिए थे, हमने उधर से निकलना ही बंद कर दिया था कि आंख ओट तो पहाड़ ओट। देख कर तो मक्खी भी खा लें, लेकिन हाजमा भी तो ठीक रखना होता है ना। हां, रेहड़ी वालों को डंडे लगाए, उनका सामान उलट दिया, ताकि जनता को यह लगता रहे कि पुलिस नालायक नहीं है।’ घाघ सहायक को समझ आ

गया कि बच्चू को कुछ पल्ले नहीं पड़ रहा है और यही तो वह चाहता भी था।

‘तो फिर ये तुम्हारे अन्नदाता कौन हैं, जिन्हें हम नहीं जानते?’ नया अफसर भी नई दिलचस्पी लेने लगा।

‘सर, ये रोज की कमाई देने वाले हैं यानी जिनसे हमारे घर का राशन आता है यानी जिनकी वजह से हमें वेतन मिलता है।’ सहायक को अफसर ने टोक दिया।

‘साफ-साफ बताओ, क्या केस है?’

‘सर, शहर के तमाम गुंडे-बदमाश ही तो हमारे मासिक अन्नदाता हैं, क्योंकि ये हफ्ता देने में नियमित रहते हैं और इन्हें हम जब चाहे पकड़ लेते हैं और छोड़ भी देते हैं। इतने सीनियर गुंडे भी हैं कि गिरफ्तार करने जाओ तो यह भी नहीं पूछते कि हमारा अपराध क्या है। समझते हैं चोरी में धरे गए हैं और थाने जा कर मालूम पड़ता है गांजे की पुड़िया में गिरफ्तार हुए हैं। इन्हें जब चाहे पकड़ लो, चूं तक नहीं करते।’ सहायक ने बताया।

‘तो फिर इन्हें किस बात की शपथ दिलवानी है, इतने तो समर्पित हैं ये?’ अफसर का दिमाग चकराने लगा।

‘जिस तरह जब-तब इन असामाजिक-तत्वों की गिरफ्तारी से पुलिस की छवि उज्ज्वल होती है, उसी तरह शपथ से यह भी पता चलता है कि ‘प्राण जाय पर वचन ना जाए’ आज भी गुंडों, बदमाशों और चोरों में बाकी है। रघुकुल की यह रीत इनकी वजह से ही कायम है।’ सहायक समझाने लगा, अफसर समझने को तैयार ही नहीं था।

‘सर, आपने चरणदास चोर का किस्सा सुना ही होगा, वही हबीब तनवीर वाला नाटक?’

अब अफसर तो आईपीएस की तैयारी में लगा था, बेचारा क्या जाने आसपास दुनिया में क्या हो रहा है। उसके लिए तो चरणदास चोर और हबीब तनवीर ‘एलियन’ की तरह थे।

सहायक को पता था कि यह बजरबट्टू कुछ नहीं जानता, इसलिए किस्सा सुनाने लगा।

‘सर, चरणदास, चोर था।’

‘अच्छा, मैं समझा उसका सरनेम था।’ अफसर अब हंस दिया।

‘उस जैसा चोर पूरे इलाके में नहीं था। एक बार चरण दास को साधु बाबा मिले। बाबा की बातों का चरण दास पर ऐसा असर हुआ कि वह चेला बनने की जिद ठान बैठा। साधु ने समझाया कि वैसे ही तेरा बिजनेस बढ़िया चल रहा है तो क्यों दूसरी तरफ हाथ मारना। लेकिन चरणदास तो जिद का पक्का था। एक बार जो चीज पसंद आ जाती, लेकर ही रहता।

साधु ने उससे कहा ‘तू तीन शपथ ऐसी ले, जो जिंदगी में कभी तोड़ेगा नहीं।’ साधु भोला था, उसे उम्मीद थी कि चरणदास शपथ लेगा ‘चोरी नहीं करूंगा, किसी को धोखा नहीं दूंगा और पराई सम्पत्ति पर नजर खराब नहीं करूंगा।’

चरणदास भी कम गुरु-घंटाल नहीं था, उसने तीन कसम खाई ‘कभी किसी रानी से ब्याह नहीं करूंगा, कभी हाथी पर नहीं बैठूंगा और ये शपथ कभी नहीं तोड़ूंगा।’ साधु तो चरणदास के चक्कर में फंस चुका था, इंकार का सवाल नहीं था। उसे चेला बना लिया और गुरु मंत्र दे दिया।

‘फिर... फिर क्या हुआ?’

अफसर को मजा आने लगा था। पहली बार पता चल रहा था कि स्टोरी ऐसी भी इंटरेस्टिंग होती है।

‘कुछ समय बाद, उस राज्य की रानी को जंगल में बदमाशों ने घेर लिया और उसी समय चरणदास भी उधर से गुजरा। उसने जैसे-तैसे तिकड़म लगाकर रानी को बचा लिया और महल पहुंचा दिया। रानी तो चरणदास पर फिदा हो गई, जिद पर अड़ गई कि शादी करूंगी तो इससे ही। चरणदास की दिक्कत यह कि उसने तो शपथ ली थी। रानी से शादी नहीं कर सकता था। रानी से यह इंकार बर्दाश्त नहीं हुआ और उसने चरणदास के सामने शर्त रखी ‘या तो शादी या फांसी।’ चरणदास ने फांसी कुबूल की मगर शपथ नहीं तोड़ी। तो, ऐसे होते हैं चोर!’

सहायक ने देखा अफसर की आंखें भीग गई हैं! समझ गया, नया है, जल्दी ही आंखों में सूअर का बाल आ जाएगा और हमारे जैसा हो जाएगा।

‘तो सर, चोरों की यह खूबी आज तक पुलिस डिपार्टमेंट की वजह से कायम है। हम उन लोगों को हर साल यहां बुलाते हैं, जो अपराध नहीं करने की कसम हर दीवाली पर खाते रहते हैं। इससे फायदा यह होता है कि वर्तमान चोर-उचक्के बंदी बढ़ा देते हैं और सिफारिश लगवाते रहते हैं कि इस शपथ समारोह में उनका नाम शामिल ना हो। देखा जाए तो इस सालाना-कर्मकांड से पुलिस विभाग की साल भर में ध्वस्त छवि सुधर जाती है। अब जनता को तो यह याद नहीं रहता है कि पिछली बार छोटेलाल ने शपथ ली थी या छन्नू ने।’

और आपने देखा, दीवाली की पूर्व-संध्या पुलिस थाने में शपथ-समारोह कितने उत्साह के साथ मनाया गया।

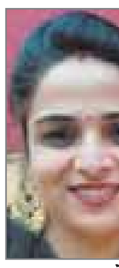

अभिव्यक्ति

अदिती सिंह भदौरिया

लेखक स्तंभकार हैं।

ज्ञान से बने पहचान परिवार से नहीं

नाम में क्या रखा है। जब लोग ऐसी बातें करते है तब हैरानी होती है की नाम में ही तो सबकुछ रखा है। लोगों के बीच अपनी पहचान बनाने के लिए आपको अपने भीतर आत्मविश्वास रखना होगा। अपने आपको सफल देखने के लिए संघर्ष करना या स्वयं की सफलता के सपने देखना कोई बुरी बात नहीं है। बुराई तब आ जाती है जब आप अपने क्षेत्र में काम तो सूई की नोक जितना करें, लेकिन प्रसिदी आपको विशालकाय चाहिए। इसी इच्छा के कारण हम स्वयं पर अविश्वास करने लगते है और अपने नाम को किसी और की पहचान देने के लिए निकल पड़ते है। हम जी फलां के नाती है या हम फलां के बेटे या बेटी है पर यह तो कोई पहचान नहीं हुई आपके क्षेत्र में अपने नाम को बनाने की यह तो कोई पहचान नहीं हुई।

अक्सर देखा गया है कि उचित उत्तराधिकार योजना के अभाव में पारिवारिक संघर्ष, खराब नेतृत्व निर्णय और दिशा का नुक्सान परिवार की आगामी पीढ़ी को चुकाना पड़ता है। जो अनिवार्य रूप से व्यवसाय के पतन का कारण बनता है। यह बात परिवार के बनाए नाम पर भी लागू होती है।

आज के दौर में हर क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा बढ़ गई है। सभी नाम और सम्मान पाना चाहते है, लेकिन यह सब कुछ ही लोगों के हाथ में क्यों आता है। खासकर तब यह बात और भी हैरान कर देती है जब कि एक व्यक्ति उसी क्षेत्र में अपनी पहचान बनाना चाहता हो जिसमें उसकी परिवार का कोई ना कोई अवश्य पहले से ही एक स्थापित नाम होता है। यह बात तब पुखता रूप ले लेती है कि मात्र आपके पारिवारिक पहचान आपको किसी क्षेत्र में दाखिल तो करवा सकती है, लेकिन उसी क्षेत्र में कामयाबी प्राप्त करने के लिए आपको मेहनत करने की आवश्यकता है। बिना किसी पहचान के आप हर क्षेत्र में आगे बढ़ सकते है बशर्ते कि आप मेहनत और आत्मसम्मान के साथ अपना हर कदम बढाएं। जब हम अपने ही पारिवारिक क्षेत्र को अपनाते है तो यह पूरी तरह हमारा निजी निर्णय होना चाहिए। किसी के भी दबाव में आकर बनाया गया निर्णय हमें कभी भी अपना विवेक प्रयोग नहीं करने देता। जिसका नुकसान ही होता है। जब हम अपने मन से किसी क्षेत्र का चुनाव करते है, तब हमारे भीतर आगे बढने की ललक होती है, जो हमें संघर्ष करने में मदद करती है।

हमारी मेहनत ही बताती है कि हम सफलता को किस नज़र से देखते है। यदि सबकुछ हमें बैठे-बिठाए ही मिल जाएगा तब ना तो हम किसी मुकाम तक पहुंच पारंगे और ना ही अपने साथियों को सम्मान की नज़र से देख पाएँगे। क्योकि हमें हर पल एक शंका रहेगी कि यदि हमें भाई-भतीजावाद के चलते कुछ लोग जानते है,तो स्वभाविक सामने वाला को भी सफलता ऐसे ही मिली होगी। यहाँ तक की हम उसके संघर्ष पर भी प्रश्नचिंह लगाने से नहीं कतराएंगे। यह हमारी भीतर हीन-भावना को बढ़ाता है। यह बिलकुल सही है की आप अपने पारिवारिक क्षेत्र को ही चुने, लेकिन अपनी पहचान के साथ चुने। स्वयं पर विश्वास रखें कि यह इतनी भी मुश्किल बात नहीं है। हम काबिल है ,इस बात का फैसला कोई नाम नहीं बल्कि हम स्वयं कर सकते है। लेकिन हम असफल है इस बात का फैसला हमारे परिवार के नाम के कारण लोग पहले से ही करने लगते है। क्योंकि फिर वह हमारा काम कम और हमारी तुलना अधिक करने लगते है। हम भी इस मायाजाल में फंस से जाते है। इसी के चलते कई बार हम अपने ही परिवार से दूर होने लगते है। हम उनके संघर्ष को भी कोई अहमियत नहीं देते, बल्कि रिश्ते हमें क्या फायदा दे सकते है इस बात पर हम रिश्ता निभाना चाहते है।

हम कितने काबिल है इस बात का निर्णय हम क्यों किसी और को करने दें। हम कितने योग्य है इस बात का निर्णय सिर्फ हम करेंगे। अपने परिवार की पहचान ज़रूर बताएं लेकिन सफलता का दामन थाम कर ना कि सम्बन्धों की डोर को थाम कर। परिवार को भी अवसर दें कि वह आप पर गर्व कर सकें। दूसरों को अपने ही सफल पारिवारिक सदस्यों की मदद लेने दें और आप उनसे मेहनत, संघर्ष और विनम्रता को विरासत में ले। ताकि जो नाम आपके परिवार ने बनाया है, वह हमेशा के लिए अमर हो जाए, नाकि उनका संघर्ष किस्सा बनकर रह जाए। आपका परिवार दूसरों के लिए सीढ़ी हो सकता है पर आपके लिए एक मिसाल है। जिसे हमेशा याद रखना है। यह याद रखें कि भगवान ने हरेक के भीतर ज्ञान के दीपक जलाए है, हर वर्ष दीवाली इसी रोशनी को एक उम्मीद के तरह हमारे भीतर एक लौ जलाती है। राम जी के भाई भी अपनी - अपनी विशेषता के कारण ही पूजनीय है। जब हर वर्ष हम दीवाली पर रोशनी से अपना घर उज्ज्वल करते है, तो क्यों ना इस दीवाली पर अपने भीतर भी एक विश्वास की लौ जलाए। हम समाज में अपने ज्ञान से पहचाने जाए,जिससे हमारे परिवार को हम पर गर्व हो। अपने परिवार को यह विश्वास दिलाए की पारिवारिक नाम हमारे लिए एक बैसाखी नहीं, बल्कि हमारा गर्व है।

वक्रोक्ति

मुकेश नेमा

लेखक मध्यप्रदेश के प्रशासनिक अधिकारी हैं।

बदला लेने की खानदानी परंपरा

बदला लेना भारतीय जनजीवन की सुदीर्घ परंपरा है। एक वक्त था भिंड मुरैना में केवल लड़के पैदा किए जाने की मुख्य वजह यही थी। केवल लड़के इसलिए क्योंकि लड़कियों से इस मामले में ज्यादा उम्मीद नही की जा सकती। बदला लेना है। किससे? अपने ताऊ से। चाचा से। पड़ौसी से। और पता नहीं किससे। किस बात का बदला लिया जाना है ? पड़ोसी के लकड़दादा ने हमारे परदादा का दो फुट खेत दबा लिया था। ताऊ ने मकान से हिस्सा नहीं दिया। फलाने के बाबा ने हमारे दादा के खेत की मेड़ तोड़ कर पानी चुरा लिया था। हमारे बाप उसकी भैंस खोल लाए थे तो उसके बाप ने हमारे बाप को गोली मार दी थी। पाँच पीढ़ी पहले उनके खानदान के पता नहीं कौन हमारे खानदान के पता नहीं किसकी लड़की भगा ले गए थे। खून खच्चर हुआ था तब। और उसका बदला लेने के लिए तभी से गोलियाँ चल रही हैं।

कुछ बदले खानदानी होते है। बस इतना पता होता है कि फलाने से बदला लिया जाना है। किस बात का बदला लिया जाना है वो ज्यादा ध्यान नही। पीढ़ियों पुराने झगड़े। उसके बब्बा ने हमारे दद्दा को गोली मारी थी तो हमारा भी फर्ज है कि हम उसके बाप को गोली मारें और जेल चले जाए। ऊपर जो लड़के पैदा करने का जिक्र है वो इसी बाबत है। एकाध लड़का बदला लेने के प्रयोजन से अतिरिक्त पैदा किया जाता है। कि वो बडा हो। पड़ौसी को गोली मारे। जेल जाए। ऐसा तब भी होता है गोली मारने वाले के खानदान वालों को कलेजे में ठंडक पड़ती है।फिर जिसने गोली खाई है उसके भाई बंदों का भी फर्ज बन जाता है कि वो भी अपने लिए ठंडक का इंतज़ाम करें। एकाध लड़का फालतू पैदा करें जो इस गौरवशाली परम्परा को जारी रख सके।

हमारी हिंदी फ़िल्मों मे कुछ साल पहले तक हीरो क्या करता था ? वो बदला लेता था और इसीलिए हीरो था। बाप को मार दिया। साहूकार ने अम्मा छेड़ी। विलेन ने बहन से बदतमीज़ी की जैसे महत्वपूर्ण मामलों मे बदला लिए जाने की कार्यवाही उसे हीरो बनाती थी। बदला लेने से ही आदमी हीरो बनता है। इज्जत पाता है और हममें से ऐसा कौन है जो हीरो नहीं बनना चाहता ?

बदला लेना पड़ता है आदमी को। न ले तो मूँछों का सवाल आ जाता है। बाप धिक्कारता है। अम्मा दूध का ताना देती है। बीबी मर्दानगी पर शक करती है। लोग हँसते हैं देखकर। बदला लेने का काम छोड़ दे आदमी तो कट्टे तमंचे बनाने वाले भूखे मर सकते हैं। ये भी न करे जनता तो पुलिस वकील अदालतें क्या करेंगी? जेलों का क्या होगा। सबकी रोजी रोटी चलती रहे ,जीवन का कुछ उद्देश्य बचा रहे इसलिए बदला लिए जाते है।

बदला लेना अच्छी बात। बदला लेने वाले भरोसेमंद। हिसाब किताब के पक्के। बदला लेने से कॉन्फ़िडेंस लेबल हाई होता है। शोले के ठाकुर साहब वाली फ़ीलिंग आने लगती है। किसी को नीचा दिखाने ,नाक रगड़वाने मे जो सुख और वो और कहाँ। लोग नमस्ते करने लगते हैं। आत्मा तृप्त हो जाती है बदला लेने से और बदला लेने वाले का बिना पिंडदान के भी मोक्ष हो जाता है। बदला लेना उपलब्धि है।नाती पोतों तो सुनाने वाली कहानी है इसलिए आदमी और कुछ करे न करे उसे किसी न किसी से रार ठान कर बदला जरूर लेना चाहिए।

और फिर देश बदला लेते हैं। सरकारें बदला लेती हैं। सरकारी मुलाजिम बदला लेते हैं। इसलिए लेते हैं क्योंकि वो हम ही हैं। उसने बिगड़ा तो हम उससे बेहतर बिगाड़ कर दिखाएँगे। और फिर बदला लेना ज़िम्मेदारी है हमारी। हम इससे भाग नही सकते। हम भागना नही चाहते। बदला जितने जल्दी लिए जाए उतने ज्यादा असरकारी दिखता है। बदला लेने वाले की तारीफ़ें होती हैं , ऐसे में फौरन से पेश्तर बदला ले लिया जाना चाहिए भले उसके लिए कूड़ा बिखराने जैसे काम ही क्यों न करना पड़े।

सूर्योदय के साथ ग्राम्य अंचल में दिनचर्या की शुरुआत!

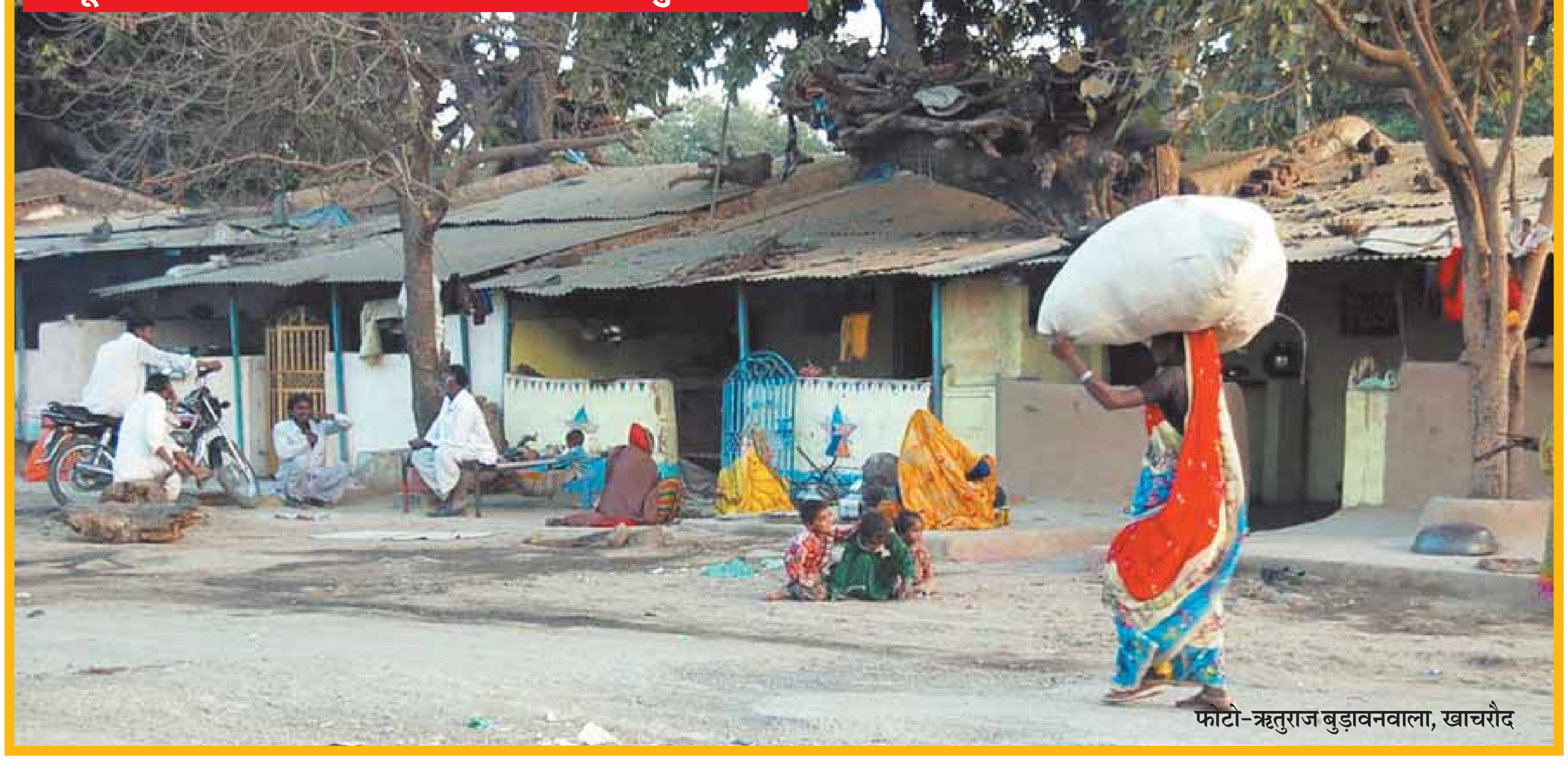

फोटो-ऋतुराज बुड़ावनवाला, खाचरौद

❒ यूके से प्रज्ञा मिश्रा

अपनी खुशी से दें... दूसरों को हंसी!

नब्बे के दशक में खरे क्लासेस खेल प्रशाल में लगा करती थी। गुजरात में कोई आपदा आई थी और खरे सर ने क्लास में कहा कि दीवाली आने वाली है, तुम सभी पटाखों के पैसों को दान कर सको तो बेहतर होगा। इन मुश्किल के मारे इंसानों को मदद मिल जाएगी। बस, वो शाम है और आज का दिन है, पटाखे फोड़ना बंद कर दिया, उसके बाद दीवाली पर सिर्फ एक फुलझड़ी का पैकेट आ जाता था और उनसे पांचों दिन निपट जाते थे और यह कई बरस तक कायम रहा।

अब घर में बच्चे हैं और उनकी वजह से पॉपअप, अनार और चकरी भी शामिल हो गए हैं। तेज आवाज पटाखों से डर कर बच्चे यही बोले कि आखिर ऐसे पटाखे बनाते ही क्यों हैं, जिनसे डर लगता है। बिना आवाज वाले पटाखे क्यों नहीं बनाते? आखिर पटाखों के साथ दीवाली का संबंध क्या है? आखिर वो कौन सा पल था, जिस पल इन तेज आवाज पटाखों को जरूरी मान लिया गया? लोग कहते हैं कि आतिशबाजी के साथ दीवाली मनाने की परंपरा मुगलकाल में पड़ी और हर साल बढ़ती ही जा रही है।

जब-जब लोगों ने पटाखों के इस्तेमाल पर कमी या रोक की बात की है, हर बार अधिकार और धर्म से जोड़ कर देखने लगते हैं। पिछले हफ्ते से रोजाना शाम को सड़कों पर तमाशे देख रही हूं। बच्चों को लेकर पटाखे फोड़ने निकलते हैं, अनार और चकरी जब तक चलती है, चेहरे वाकई दमकते दिखाई देते हैं, लेकिन जैसे ही तेज आवाज वाले बम शुरू होते हैं, बच्चे और जानवर जगह ढूंढते हैं और जो सूरमा यह पटाखे छोड़ रहे होते हैं, वो भी बम में आग लगा कर इस तेजी से भागते हैं कि सौ मीटर की दौड़ में बेस्ट तो हैं ही। उन रॉकेट नुमा पटाखों की बात ही निराली है, बमुश्किल एक-दो सीधे ऊपर की तरफ जाते हैं, वरना कोई सड़क से गुजरने वाले को जलाता जाता है तो कोई यूं लगता है कि उड़ने के गुण ही रॉकेट ने हैं। अस्पताल और फायर ब्रिगेड वालों से की जरूरत कितनी बढ़ जाती है।

दुनिया भर में नए साल के स्वागत के लिए आतिशबाजी की जाती है और आमतौर पर एक शहर में एक जगह दस-पंद्रह मिनट तक ये होता है, ऐसे में जनता की जेब से दमड़ी भी नहीं जाती। पटाखे कैसे भी हों, जहर फैलाते हैं। भले ही आसमान में होने वाली आतिशबाजी खूबसूरत लगे,

लेकिन उसके अंजाम बुरे होते हैं।

जरूरी है कि त्यौहार हों या खुशियां, इन्हें मनाने के तरीकों की नियम-कायदों की किताब को फिर से खंगाला जाए और मौजूदा दौर के मुताबिक सुकून से खुशी से मनाने वाले के तरीकों के सांचे में ढाला जाए।